भारत की कहानी

[भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत]

लेखक

भगवतशरण उपाध्याय

राजपाल एण्ड सन्ज़

कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट
दिल्ली—६.

तृतीयावृत्ति
दिसम्बर, १९५६

चित्रकार
के. सी. आर्यन

मूल्य
सवा रुपया

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफरिन पुल
दिल्ली—६.

दो शब्द

यह अपने देश की थोड़े शब्दों में लम्बी कहानी है। भारत का इतिहास आज से कम से कम पाँच हज़ार साल पहले शुरू हुआ और उस इतिहास में असाधारण घटनाएँ घटीं। संक्षेप में उनका वर्णन कुछ आसान नहीं। फिर भी आशा है, छोटे बच्चों और अशिक्षित प्रौढ़ों का इससे कुछ लाभ होगा, यही लेखक का उद्देश्य है। मैंने कुछ शब्दों को आसान करने के लिए उनके तत्सम रूप को तद्भव-सा कर दिया है, जैसे 'कुषाण' का 'कुशान'।

—भगवतशरण उपाध्याय

भारत की कहानी

बड़ी पुरानी बात है। इतनी पुरानी कि साल-महीनों में हम अटकल न लगा सकें। लगाने चलें तो दिमाग़ चकरा जाय। करोड़ों-अरबों बरस पहले की बात है।

तब यह ज़मीन न थी। न इस पर रेंगने-दौड़ने वाले जीव-जन्तुओं का वास था। न हम थे। चारों ओर आस-

मान की तरह सूना था। बस, आसमान में अनगिनत तारे चमकते थे, जैसे आज भी चमकते हैं। सूरज था, पर चाँद न था। न दिन था, न रात थी। बस सूना। न बादल, न बिजली, न मेंह।
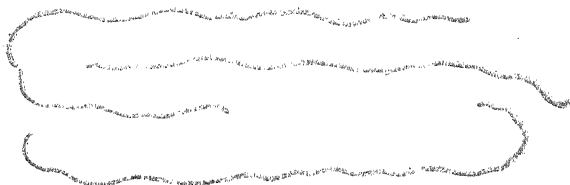
एक बार एक ठंडा तारा—सूरज का-सा बड़ा तारा—

अपनी जगह से एकाएक सरक पड़ा। ज्यादातर तारे चलते
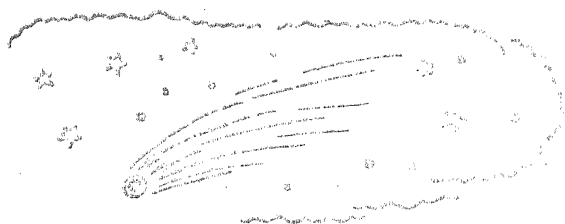
हैं। उनकी अपनी-अपनी गोलाकार राह होती है। उसी पर सदा चलते रहते हैं और जब अपनी राह से भटक जाते हैं, तो प्रलय हो जाती है। आप चूर-चूर हो जाते हैं, दूसरों को भी चूर-चूर कर डालते हैं।

सो, वह बड़ा तारा जो सरका तो उसने प्रलय मचा दी। सूरज से वह टकरा गया। सूरज आज ही की तरह
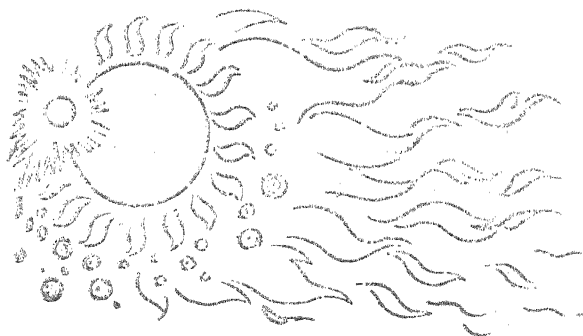
आग का गोला था, ज़मीन से लाखों गुना बड़ा। उस तारे के टकराने से सूरज भी खंड-खंड हो गया। उसके टूटे टुकड़े और चूर बिखर गए; उसके चारों ओर चक्कर लगाने लगे। इन्हीं में हमारी ज़मीन भी थी—जलते सूरज का एक जलता टूक।

धीरे-धीरे अपनी आग और गरमी बाहर फेंकती-फेंकती हमारी ज़मीन ठंडी होने लगी। अपनी ही गरमी और भाप से आसमान में बादल घुमड़ने लगे। गरज-गरज कर ज़मीन

पर बरसने लगे। ज़मीन और ठंडी हुई। उसके ऊपर कीचड़ हुई; कीचड़ सूखकर चट्टानें बनीं। भीतर भी वह ठोस होने लगी। उसमें धीरे-धीरे तांबा, टीन, चांदी, सोना, लोहा, कोयला, हीरा, जवाहर हुए। इसी से यह ज़मीन वसुधा कहलाई—रत्न धारण करने वाली वसुन्धरा।

तब ज़मीन रह-रहकर काँप उठती थी। उसके भीतर

की आग और गरमी मेंह् के पानी से भाप बनती, जो ऊपर हवा में निकल जाना चाहती। राह न मिलने से जमीन की छाती फाड़कर निकलती। सारी जमीन हिल जाती। उसमें
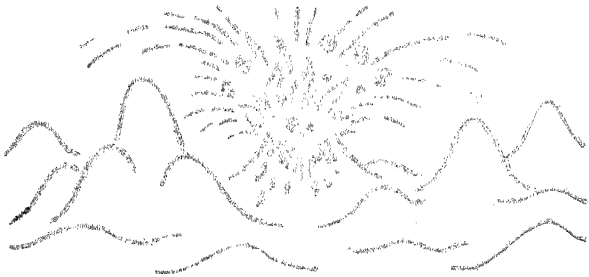
भूकम्प आ जाते। इन्हीं भूकम्पों से ऊँचे-ऊँचे पहाड़ बने, छिछले मैदान निकल आए। जल थल से बड़ा था, चौगुना बड़ा। समुन्दर का जल सूरज अपने हज़ार हाथों से खींचता।
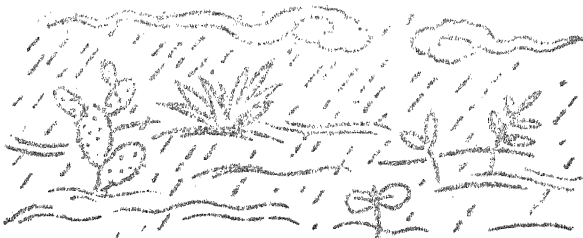
उससे फिर-फिर बादल बनते, फिर-फिर बरसते। बादल पहाड़ों से टकरा-टकराकर बरसते। ऊँचे पहाड़ों की चोटियाँ

बर्फ़ से ढकी थीं। उनके गलने से पानी की धाराएँ मैदानों में बह चलीं, जो मेंह का जल पाकर और उमड़ीं। यही धाराएँ सिन्धु, गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र कहलाईं; नर्मदा, गोदावरी, महानदी कहलाईं। वैसे ही पहाड़ हिमालय, विन्ध्याचल कहलाए। और हमारी यह लम्बी-चौड़ी ज़मीन अपनी फैली लम्बाई-चौड़ाई के कारण पृथ्वी कहलाई।

पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती थी, सूरज के चारों ओर घूमती थी, जैसे वह आज भी घूमती है। इससे रात-दिन हुए, जाड़ा, गरमी, बरसात नाम की ऋतुएँ हुईं। अपनी जगह
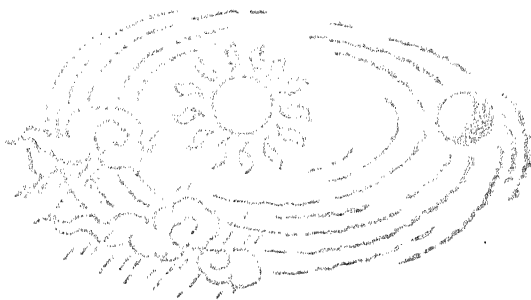
पर घूमने से रात-दिन; सूरज के चारों ओर घूमने से ऋतुएँ। पृथ्वी का जो भाग सूरज के सामने होता, वह उजाले से चमक उठता; दिन कहलाता। जो पीछे रहता, वहाँ अँधेरा होता; रात कहलाती।

फिर धीरे-धीरे मिट्टी-पत्थर में जान पड़ी, जीव जन्मे। पहले काई, झुरमुट और कीचड़ में रेंगने वाले बिना रीढ़ के
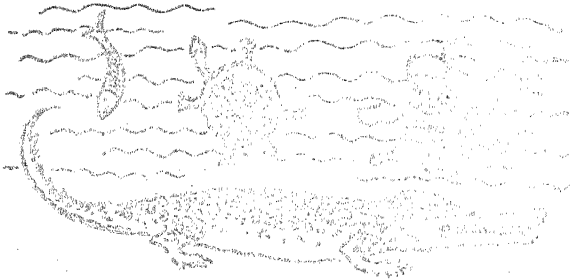
कीड़े, फिर जल में रहने वाले, फेफड़ों से साँस लेने वाले—मगर,

मछली। फिर लाखों किस्म के जानवर—बन्दर, बनमानुस, और आखिर में दुनिया को जीतने वाला—आदमी।

आदमी एक ओर खूँखार जानवरों से लड़ता था, दूसरी ओर सर्दी-गर्मी, नदी-पहाड़ से, गरज कि प्रकृति को सर करता था। शेर-चीतों के पास पंजे और विकराल दांत थे,
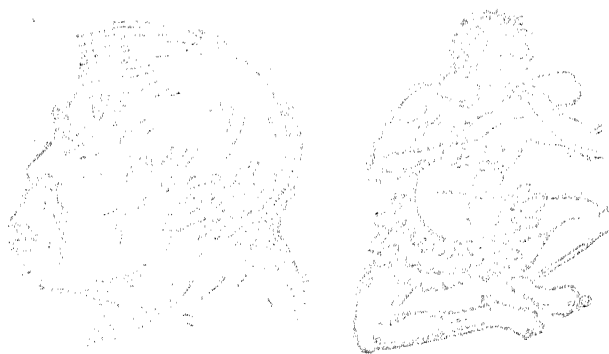
हाथी के पास ताकत और सूंड थी। आदमी निहत्था था। पर उसके पास हिकमत थी। उसकी चार उंगलियों के

पास पांचवां अंगूठा था, जिनसे वह अपने बचाव के लिए हथियार बना लेता। सर्दी से बचने के लिए मारे

हुए जानवरों की खाल ओढ़ लेता, शिकार के लिए पत्थर घिसकर तीर-बरछे बना लेता ।

वह तब शिकार करता था । कई मिलकर बड़े-बड़े हाथी तक को मार डालते थे । वह मछली मारता था ।

जंगली पेड़ों के फल, जंगली अन्न खाता था। बहुत दिनों बाद उसने जंगली आग में जले जो जानवर खाए, तो उसने भूनकर और अन्न रांधकर खाना शुरू किया। बहुत पीछे उसने नमक का जायका जाना।

तब वह झुण्ड में रहता था, गिरोह बांधकर। उससे शिकार करने में आसानी होती थी। मिलकर रहना उसकी पहली खोज थी, आग दूसरी। धीरे-धीरे वह पशु पालने और ढोर रखने लगा। तब वह इधर से उधर ढोर लिए फिरा करता। धीरे ही धीरे उसने खेती शुरू की। तब वह गांव में जमकर रहने लगा। अन्न ढोने के लिए उसने बैल-गाड़ी बनाई। उसने जाना कि गोल पहिया ही चपटी

जमीन पर दौड़ सकता है। यह आदमी की पहली सूझ थी। उस पहिए पर उसने भांडे-बरतन बनाए।

: २ :
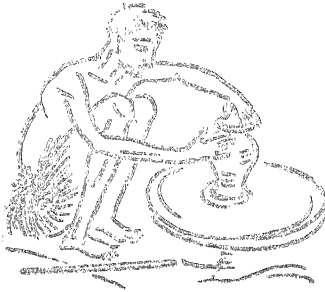
अपना देश भारत कुदरत की अनोखी देन है। उसे प्रकृति ने अपने हाथों सँवारा है। उसके उत्तर में संसार का सबसे ऊँचा पहाड़ हिमालय है, जो अपनी बर्फीली चोटियों के साथ डेढ़ हजार मील पश्चिम से पूरब चला गया है। देश का वह सन्तरी है, जिसने बाहर से आने वालों को बहुत काल तक रोका है। देश के बीच विन्ध्याचल पहाड़ है। उसके दक्खिन में पठार। विन्ध्याचल के पूरब-पश्चिम समुन्दर और दोनों ओर किनारे-किनारे उत्तर-दक्खिन पहाड़ियों का सिलसिला चला गया है, जिन्हें घाट कहते हैं। देश का मस्तक काश्मीर है, पैर का अंगूठा कुमारी। तिकोनी शक्ल का यही हमारा भारत है।

पहाड़ों के बीच में मैदान, जिन्हें सतलज, रावी, गंगा, यमुना, सोन, ब्रह्मपुत्र, महानदी, नर्मदा, ताप्ती गोदावरी सींचती हैं। उनसे सिंचकर मैदान सोने की कीमत का अन्न उगलते हैं। अन्न हमारा आहार है। उसी अन्न की खोज में लोग फिरते रहे हैं। यहां इस देश में भी आए हैं। आहार की खोज में आदमी कहाँ-कहाँ

नहीं भटकता ? अपने ढोर लिये वह चरागाहों की खोज में फिरता था, रेतीली जमीन से उपजाऊ घाटियों की ओर।

उसी घुमक्कड़ी का यह नतीजा हुआ कि हमारे देश में चार तरह के लोग बसे। काले, जो यहाँ के पुराने आदिम रहने वाले थे, पत्थरों के हथियार वाले। दूसरे द्रविड़, गेहुएँ, कुछ यहां के, कुछ बाहर से आए, जिनकी बस्तियां भारत से यूरोप की सरहद तक फैली थीं। तीसरे पूरब के रहने वाले पीले लोग, जो आज भी बर्मा में बसे हैं। चौथे आर्य, गोरे-ऊंचे, जो बाहर से आए। हम उन्हीं चारों की संतान हैं। देश के जन-जन में उन चारों का मिला-जुला खून बहता है।

हिन्दुस्तान अपने भारत का दूसरा नाम है। उसके सबसे पुराने रहने वाले खेती करते थे। गाँवों में मिट्टी के घर
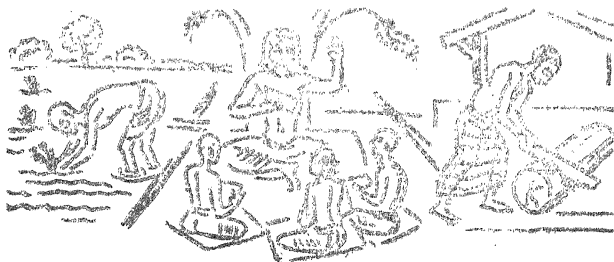
बनाकर रहते थे, सूत का कपड़ा पहनते थे। साँवले द्रविड़ों ने खेती में बड़ी उन्नति की। नदियों से नहरें निकालीं। नदियों का बहाव रोक-रोककर सिंचाई का काम आसान किया।

ज़मीन के भीतर की चट्टानें तोड़कर खानों से सोना-चांदी-टिन निकाला। तांबा और टिन मिलाकर कांसा बनाया। कांसे के अपने सुन्दर बरतन-भांडे बनाए। वे पेड़ों और सांप को पूजते थे।

आज से पांच हज़ार साल पहले सिन्ध और दक्खिनी पंजाब में एक घुली-मिली जाति बसी थी। उसकी दूर-दूर तक फैली हुई बस्तियां थीं। उनमें काले-गेहुँए दोनों तरह के लोग थे। उन्हें भी पंडित लोग द्रविड़ ही कहते हैं।

उनकी सभ्यता की कुछ न पूछिए। वे आदमी के पुराने जंगली तरीकों को कब के छोड़ चुके थे। बनैले जीवन से दूर हटकर अपनी सूझ से तरक्की करते जाना, इन्सानियत के तरीके बरतना, मिलकर अपनी भलाई की फ़िक्र करना ही सभ्यता कहलाती है। इन द्रविड़ों की सभ्यता उस काल की दुनिया में सबसे आगे थी। उनका जीवन सादा ज़रूर था, पर गांव का नहीं, शहर का था। संसार में सबसे पहले शहर उन्होंने ही बसाए। उनके शहरों के खंडहर आज भी सिन्ध के लारकाना और पंजाब के मांटगुमरी ज़िलों में खड़े हैं। उनमें एक 'मोहन-जो-देड़ो' यानी मुरदों का टीला और दूसरा 'हड़प्पा' नाम से मशहूर हैं।

धूप में सुखाई और आग में पकाई ईंटों के इनके दो मंजिले मकान थे। उनमें छत थी, रहने-नहाने के कमरे थे, कुआं था। सबसे बड़ी बात यह कि सफ़ाई का उनके यहां इन्तजाम था। छोटी नालियां शहर के बाहर निकल जाती थीं। मकान सड़कों पर खड़े थे, सामने कूड़ा डालने के डिब्बे थे, जिन्हें साफ़ कर लिया जाता था। बड़े-बड़े तालाब थे, जिन्हें कुओं से नल के ज़रिए भरा और खाली किया जाता था। सारे शहर वाले वहां नहाते। चारों ओर कमरे बने थे, जहां वे अपने कपड़े बदलते थे।

वे मांस और अन्न खाते थे। खेती करते थे। घर में करघे पर बुना खद्दर पहनते थे। गहने भी पहनते थे—सोने,
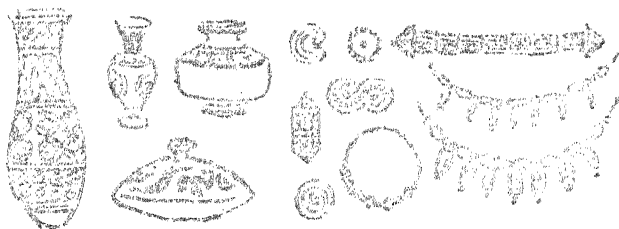
चांदी, हाथीदांत, मिट्टी के गहने। औरत-मर्द दोनों। उनके पास करीब सभी जानवर थे, पर शायद घोड़े और कुत्ते न थे। अपने रथों में बैल जोतते थे। तौल के लिए उनके पास ठीक तौल के बटखरे थे। वे जानवरों और पेड़ों के

अलावा मिट्टी की बनी देवी की पूजा करते थे। लिंग और पितरों को भी वे पूजते थे। कुछ अपने मुर्दे गाड़ते थे, कुछ जलाते थे, कुछ जलाकर गाड़ते थे। कला में उनकी बड़ी रुचि थी। जानवरों के सुन्दर से सुन्दर रूप उन मुहरों पर खुदे मिले हैं, जो वे अपनी लिखावट पर लगाते थे। इन मुहरों पर मूरतों की खुदाई इतनी ग़ज़ब की है कि लगता है, वे जीवित हैं। उन पर की लिखावट से पता चलता है कि वे लोग लिखना जानते थे। वह तस्वीरों की-सी लिखावट आज भी नहीं पढ़ी जा सकी।
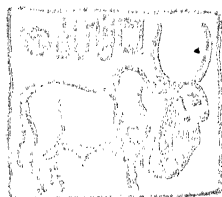
मोहन-जो-देड़ो और हड़प्पा के रहने वाले पत्थर के साथ-साथ कांसे के हथियारों का इस्तेमाल करते थे। इसीसे उनका जमाना 'कांसे का युग' कहलाता है। अभी उन्हें लोहे का पता न था। एक दिन उत्तर की ओर से घोड़ों पर चढ़ी एक नई जाति आई—बड़ी तगड़ी-ताकतवर जाति। उसके लड़ाके गोरे-ऊंचे थे; सुन्दर और खूंखार। यह उनका इस देश पर हमला था। जमकर लड़ाइयां हुईं। लोग अपनी चप्पा-चप्पा जमीन के लिए जूझ गए। पर जीत हमला करने वालों के हाथ रही। उन्होंने सिन्ध-पंजाब के उन

नगरों को बरबाद कर दिया। कुछ अजब नहीं जो मोहन-जो-देड़ो—'मुर्दों का टीला' कहलाने लगा हो। उसी ज़मीन पर विजयी लोगों ने अपने गाँवों के बल्ले गाड़े।

: ३ :

जिन लोगों ने सिन्ध-पंजाब की द्रविड़ सभ्यता का नाश किया था, वे अपने को 'आर्य' यानी श्रेष्ठ कहते थे। उनकी ज़बान थी पुरानी संस्कृत। उसी भाषा में उन्होंने अपने देवताओं की स्तुति की। वे कहाँ से आए थे, यह कहना तो मुश्किल है, पर आए ज़रूर थे वे बाहर से, यह तय है। शायद पूरब-दक्खिनी यूरोप से आए, शायद उत्तरी एशिया से, शायद बीच के एशिया से।
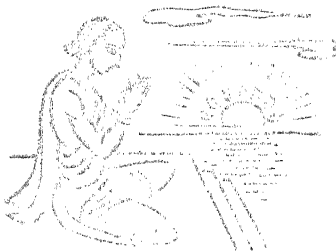
उनका जीवन देहाती था। लिंगपूजा को वे गाली समझते थे। वे वरुण, सूर्य, अग्नि, इन्द्र वगैरह की पूजा करते थे। इनकी ताकत का उनपर बड़ा असर था। इनसे उन्हें डर भी लगता था। इन्द्र उनका सबसे महान् देवता था। अपने दुश्मनों को जीतने के लिये वे उसकी स्तुति करते थ।
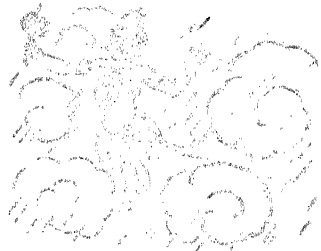
कुछ बड़ी सुन्दर प्रार्थनाएँ उन्होंने देवी उषा की की हैं। उषा पूरब में तड़के आसमान पर आ जाने वाली वह लाली है, जिसके बाद ही सूरज निकलता है। देवताओं को प्रसन्न करने के लिए वे यज्ञ करते थे। उनकी प्रार्थनाएँ-

कविताएँ बाद में इकट्ठी कर ली गईं, तब उन्होंने लिखना सीखा। उस पुस्तक का नाम 'ऋग्वेद' है। ऋक् कहते हैं ऋचाओं या स्तुति को; वेद—ज्ञान या इल्म को। इस तरह की उनकी चार पोथियाँ थीं—ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद। ऋग्वेद दस हिस्सों में बँटा है, जिन्हें 'मण्डल' कहते हैं। छन्द बनाने वालों को ऋषि कहते थे। छन्द या मन्त्र स्त्रियाँ भी बनाती थीं।

इन्हीं किताबों से आर्यों के रहन-सहन का पता चलता है। वे खेती करते थे। कई तरह के पेशे करते थे। इन्हीं

पेशों के कारण उनमें पीछे कई जातियां बन गईं, जिन्हें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र कहा जाने लगा। ब्राह्मण का काम पढ़ना-

पढ़ाना, पुरोहिताई करना था; क्षत्रिय का लड़ना-भिड़ना; वैश्य का ढोर पालना, खेती-तिजारत करना; और शूद्र का तीनों की सेवा करना। तीनों पहले अपने पेशे बदल सकते थे, आपस में ब्याह-शादी कर सकते थे, परन्तु बाद में वे केवल अपनी ही बिरादरी में खाने-पीने, शादी-व्यवहार करने लगे। शूद्र कुछ तो आर्यों में ही गरीब लोग थे, कुछ लड़ाई में जीते हुए द्रविड़ वगैरह गुलाम थे।

जनता गाँवों में बसी थी। उन पर 'राजा' शासन करता था। वह क्षत्रिय घराने से चुना जाता था। उसे जनता चुनती थी और उसके मनमानी करने पर उसे मार भगाती थी। जनता की 'सभा' और 'समिति' नाम की अपनी सभाएँ थीं, जो राजा को सही राह पर चलाती थीं। आर्य

लोग बहुत-से त्यौहार मनाते थे। गाना, बजाना, नाचना वे पसन्द करते थे। उनके कबीलों या जनों में बड़ी-बड़ी लड़ाइयां

भी होती रहती थीं। देशी शत्रु के ख़िलाफ़ वे मिलकर लड़ते थे। वे धनुष-बाण, भाले, फरसे और तलवार से लड़ते थे।

आर्यों ने धीरे-धीरे द्रविड़ों से बहुत कुछ सीखा। पहले तो दोनों लड़े, फिर मिलजुलकर एक हो गए। अब आर्यों की पूजा में भी उन्हीं की देखादेखी जोग, टोना, टोटका आ गए। मूरतें भी पूजी जाने लगीं। दोनों के विचारों और रहन-सहन के मिल जाने से इस देश में एक नई सभ्यता का जन्म हुआ। उसके आज हम वारिस हैं। आर्यों की लड़ाकू सभ्यता में द्रविड़ों ने शान्ति का अपना नारा लगाया। अहिंसा की वह पतली आवाज़ थी; इन्सानियत की आवाज़ थी वह, जो हमें बनैले जीवन से दूर ले चली।

: ४ :

धीरे-धीरे आर्य पूरब की ओर बढ़े। पहले वे पंजाब में रहते थे, अब गंगा-यमुना लांघकर उत्तरप्रदेश और बिहार पहुँचे। वहां लड़कर उन्होंने बड़े-बड़े राज्य कायम किए। उन्हें जनपद-राज्य कहते हैं। अब ब्राह्मण इतना महान् न था। बड़े-बड़े राज्य खड़े हुए तो बड़े-बड़े राजा भी हुए। पूजा से बढ़कर राजनीति हुई। क्षत्रिय अपने को ब्राह्मणों से भी बढ़कर समझने लगे। वह ज्ञान और समाज के अगुआ बने। उन्होंने अपने ज्ञान को फैलाया। आर्यों का ज्ञान आत्मा के सम्बन्ध में था। उनका कहना था कि जगत् का बनाने वाला परमात्मा एक है। वही ब्रह्म है। इच्छा करने पर वह सृष्टि करता है। हर जीव में आत्मा है, जो कभी नहीं मरता, केवल कपड़ों की तरह शरीर को बदलता रहता है। जब तक अच्छे काम करके परमात्मा में मिल नहीं जाता, तब तक बार-बार जन्म लेता है। जब उसे ज्ञान हो जाता है, तब जन्म के बन्धन से छूटकर वह परमात्मा में मिल जाता है। उन दिनों लोगों ने जन्म और

मृत्यु के बारे में भी सोचा। हम कहां से आए हैं ? मरकर कहां जाएंगे ? यह वे बराबर सोचते रहे। इनको उन्होंने लिख डाला। जिन पोथियों में इनका बयान लिखा है, उन्हें उपनिषद् कहते हैं। भारत ने इनके रूप में एक नई विचार-धारा को जन्म दिया, जो 'दर्शन' कहलाता है। प्रसिद्ध धर्म-पुस्तक 'भगवद्गीता' या 'गीता' इन्हीं उपनिषदों का निचोड़ है। वह भी एक प्रकार की उपनिषद् ही मानी जाती है।

आर्यों की जीत और पूरब की ओर बढ़ने की कहानी 'रामायण' और 'महाभारत' में लिखी है। ये दोनों पुस्तकें पद्य में हैं और संस्कृत भाषा के अनमोल रत्न मानी जाती हैं। इनकी कहानी तो प्राचीन काल में घटी, पर लिखी वे बाद में गईं। रामायण में इक्ष्वाकुवंश की कहानी है, महा-भारत में कुरुवंश की।

राम के पुरखे कौसल या अवध के राजा थे। अयोध्या उनकी राजधानी थी। राजा दशरथ की तीन रानियां थीं—कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी। राम कौशल्या के पुत्र थे, लक्ष्मण और शत्रुघ्न सुमित्रा के और भरत छोटी रानी कैकेयी के। राम ने स्वयंवर में धनुष तोड़कर जनकपुर के राजा जनक की लड़की सीता से ब्याह किया। दशरथ ने राम को युवराज बनाना चाहा, पर कैकेयी लड़ गई। उसे राजा ने अपने प्राण बचाने के बदले वर मांगने को कहा

था। उसी मौके पर उसने इन वरों को मांगा। अब उसने भरत के लिए राज्य और राम के लिए चौदह वर्ष का बन-वास मांगा। पिता की बात रखने के लिए राम बन चले गए। साथ सीता और लक्ष्मण भी गए। बहिन सूर्पनखा के अपमान का बदला लेने के लिए एक दिन लंका का राजा रावण साधु का वेष धर अकेली सीता को हर ले गया। बानरों की सहायता से राम ने लंका पर चढ़ाई की और रावण को मारकर सीता का उद्धार किया। तब तक चौदह बरस बीत चुके थे। राम सबके साथ अयोध्या लौटे। भरत ने पिता के मरने पर राज्य करने से इन्कार कर दिया था और वे राम की ओर से प्रजा की रक्षा करते रहे थे। उन्होंने राम को राज्य सौंप दिया। राम राज्य करने लगे। 'रामायण' वाल्मीकि ने लिखी।

'महाभारत' व्यास मुनि ने लिखा। उसमें सैकड़ों कथाएँ हैं, पर असल कथा कौरव-पांडवों की है। उसमें लिखा है कि विचित्रवीर्य के मरने पर बड़े भाई धृतराष्ट्र के अन्धे होने से छोटे

भाई पांडु हस्तिनापुर के राजा हुए। हस्तिनापुर मेरठ जिले में था। पांडु के मर जाने पर धृतराष्ट्र राजा हुए, पर पांडु के पाँचों लड़कों—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव के आ जाने पर युधिष्ठिर को उन्होंने अपना युवराज बना दिया। इस पर उनका बेटा दुर्योधन चिढ़ गया। उसके कोप से पांडवों को भागना पड़ा। उसी बीच राजा द्रुपद की बेटी द्रौपदी का स्वयंवर हुआ। ऊपर घूमती मछली को नीचे तेल में देखकर अर्जुन ने बाण से बेध दिया और इस तरह जीती हुई द्रौपदी से पांचों भाइयों का ब्याह हो गया। धृतराष्ट्र ने फिर पांडवों को बुलाकर उनको आधा राज्य दे दिया। पर दुर्योधन को इससे सन्तोष न हुआ और उसने मामा शकुनि की मदद से धोखे

से जुए में युधिष्ठिर से उसका राजपाट, स्त्री सब कुछ जीत लिया। पांडवों को बारह बरस वन में और एक बरस छिपकर रहना पड़ा। बाद में वासुदेव कृष्ण ने उनका राज्य वापस लौटा देने के लिए दुर्योधन को बहुत समझाया, पर उसने जब न माना, तब महाभारत की लड़ाई छिड़

गई। सारे कौरव मारे गए। दोनों ओर की सेनाएँ मर मिटीं। केवल पाँचों पांडव और कृष्ण बचे। युधिष्ठिर ने बहुत काल तक राज्य किया। फिर राज्य अर्जुन के पोते परीक्षित को सौंप, वह भाइयों और द्रौपदी के साथ हिमालय चले गए।

उस काल का जीवन बड़ा सादा था। लोग गांवों में रहते थे। गांव में सभी कुछ पैदा हो जाता था। बनिया, बढ़ई, नाई, धोबी सभी वहां थे। चरागाहों पर सभी का अधिकार था। खेत राजा का न था। वह केवल 'कर' वसूलता था। पंचायत गांव का इन्तज़ाम करती थी और अन्न के रूप में लगान वसूल कर राजा के आदमी को दे देती थी। पुरोहित पूजा करता था, पंडित बालकों को पढ़ाता था, ब्याह कराता था। लुहार-बढ़ई हल बनाते थे। धोबी कपड़े धोता था। किसान सबको अनाज के रूप में उनका पावना चुका देता था। राजा एक-दूसरे पर चढ़ाई करते थे, पर किसान चुपचाप हल जोतते रहते थे।

: ५ :

पहले लिखा जा चुका है कि उपनिषदों के युग में क्षत्रियों का बोलबाला था। वे ही समाज के अगुआ थे। उन्हीं की कथाएँ गीतों के रूप में गाई जाती थीं। रामायण और महाभारत भी उन्हीं की तारीफ़ में लिखे गए। ब्राह्मणों के ऊँच-नीच विचारों का विरोध हो रहा था। लोगों को यज्ञ में पशुओं का मारा जाना भी पसन्द न था और उसके खिलाफ़ भी आवाज़ उठी। वेद और ब्राह्मण की उसी विरोधी परम्परा में वर्धमान महावीर और गौतम बुद्ध का जन्म हुआ। दोनों ब्राह्मणों की जात-पांत के विचारों के दुश्मन थे; दोनों क्षत्रिय थे और रईस घरानों के थे। दोनों जहाँ पैदा हुए थे, वहां पंचायती राज्य कायम थे।
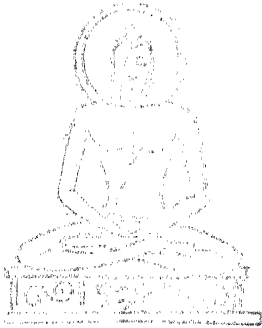
वर्धमान महावीर बिहार में मुज़फ़्फ़रपुर ज़िले के लिच्छवियों के पंचायती राज्य में जन्मे थे। उनकी राजधानी वैशाली थी। ७७०७ राजा मिलकर उस राज्य को संभालते थे। वे जनता के नेता होते थे। जनता उन्हें चुनती थी।

वहीं के कुन्ड गांव में वर्धमान महावीर का जन्म हुआ। उनके पिता का नाम सिद्धार्थ और माता का नाम त्रिशला था। तीस वर्ष की उम्र में वर्धमान घर-द्वार छोड़कर जंगल चले गए और वहां तप करने लगे। शरीर को तपाकर उन्होंने ज्ञान पाया। वे जन्मने और मरने से छुट्टी पा गए। मृत्यु पर विजय पाने के कारण वे 'जिन' कहलाये और जिस धर्म का उन्होंने प्रचार किया, वह जैनधर्म कहलाया। उन्होंने अपने पीछे चलने वालों को उपदेश किया कि वे चोरी न करें, हिंसा न करें, झूठ न बोलें, रुपया-पैसा न रखें और ब्रह्मचारी रहें। किसी जीव को न सताना, जैनों में सबसे बड़ा धर्म माना जाता है। वे लोग सब प्रकार के छोटे-बड़े जीवों पर दया करते हैं और इस डर से कि सांस लेते समय कीड़े न मर जाएँ, अपने मुंह पर कपड़ा भी बांधे रहते हैं। जैनों के सबसे बड़े मन्दिर माउन्ट आबू और गिरनार में हैं।

सिद्धार्थ गौतम भी कपिलवस्तु के शाक्यवंश के ऊँचे कुल में पैदा हुए थे। कपिलवस्तु उत्तर-प्रदेश के उत्तर में नैपाल की तराई में है। वहां भी पहले

पंचायती राज्य था और सिद्धार्थ के पिता शुद्धोदन उसके नेता थे। महावीर की भांति सिद्धार्थ भी आज से करीब ढाई हजार वर्ष पहले पैदा हुए थे। महावीर की ही तरह उनका मन भी दूसरों का दुःख देखकर पिघल जाता था। संसार का दुःख दूर करने के लिए वह बचपन से ही चिन्तित रहने लगे थे। उनकी चुप्पी से डरकर उनके पिता ने यशोधरा नाम की सुन्दर लड़की से उनका ब्याह कर दिया और जाड़ा, गर्मी, और बरसात के लिए उनके लिए अलग-अलग महल बनवा दिए। लेकिन गौतम का मन भोग-विलास में न लगा। एक रात उनतीस साल की उम्र में बीवी-बच्चे को महल में छोड़ वे घोड़े पर चढ़कर बाहर निकल गए। दूर जाकर उन्होंने अपने लम्बे बाल तलवार से काट डाले, कीमती कपड़े फेंक डाले और घोड़े को साईस द्वारा वापस भेज दिया। साधु हो गए। पहले तो ज्ञान की खोज में वे बड़े-बड़े महात्माओं के पास गए, पर जब वे भी इनका सही जवाब न दे सके कि दुनिया में दुःख क्यों है, जन्मने और मरने के भारी दुःख का अन्त कैसे हो? तब वे गया में जाकर तप करने लगे। बगैर खाये-पिये, सांस भर चलते रहने के लिए आहार लेकर वे बरसों तप करते रहे, पर ज्ञान न मिला। तब एक दिन जब वे आँख बन्द किए बैठे थे—पास के गांव से कुछ औरतें नाचती-गाती निकलीं। उनके गाने का मतलब था कि बीन

के तारों को बहुत न खींचो, नहीं तो टूट जायेंगे; बीन के तारों को बहुत ढीला भी न करो, नहीं तो वह न बजेगी। एक नया रास्ता मानो गौतम की आंखों के सामने खुल गया। उन्होंने काया को तपाना बेकार समझा और उस गाने का मतलब यह लगाया कि अत्यन्त तप भी खराब है, अत्यन्त आराम भी बुरा है; सही रास्ता दोनों के बीच का है। फिर तो उन्होंने स्नान किया और प्रसन्न मन से पेड़ के नीचे बैठे। इसी बीच गांव से सेठ की लड़की सुजाता खीर लेकर आई

और गौतम को पेड़ का देवता समझकर खीर खिला दी। गौतम अब सब प्रकार से तृप्त होकर पीपल के पेड़ के नीचे बैठ विचार करने लगे। एकाएक उन्हें ज्ञान हो गया। इसी ज्ञान के कारण वे 'बुद्ध' या ज्ञानी कहलाए।

उनका ज्ञान यह था कि दुःख है; दुःख का कारण है;

दुःख का नाश है; और दुःख का नाश करने का उपाय है। वह उपाय अत्यन्त विलास और अत्यन्त दुःख के बीच की राह पर चलना है। अच्छी बुद्धि, अच्छे विचार, अच्छे रहन-सहन, अच्छी मेहनत वगैरह उस दुःख का अन्त करते हैं और आदमी जन्म-मरण के बन्धन से छूट जाता है। अपने इन्हीं विचारों का बुद्ध देश में घूम-घूमकर पैंतालीस वर्ष तक प्रचार करते रहे। सबसे पहले उन्होंने बनारस के पास
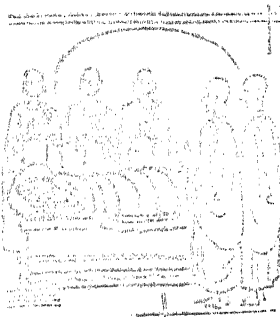
सारनाथ में उपदेश दिया और अन्त में ८० वर्ष की आयु में देवरिया जिले के कुसीनारा गांव में वे मरे। बुद्ध के धर्म को मानने वाले 'बौद्ध' कहलाते हैं और उनकी जमात 'संघ' कहलाती है। बुद्ध की बातें इतनी सरल थीं कि दुनिया में दूर-दूर तक उनका प्रचार हुआ और लोगों ने प्रेम और दया को सबसे बड़ा धर्म माना।

भारत में बुद्ध के पहले से ही बहुतेरे पंचायती राज्यों का जन्म हो चुका था। उन्हीं में लिच्छवी और शाक्य भी थे, जिनका हाल ऊपर दिया जा चुका है। ऐसे बीसों पंचायती राज तब थे, जिनको 'संघ' या 'गण' कहते थे। उनकी

सभाओं में जनता के चुने हुए पंच बैठते थे। यही सभाएँ देश पर हुकूमत करती थीं।

इन पंचायती राज्यों के अलावा कुछ ऐसे राज्य भी थे, जहां राजा राज्य करते थे। बुद्ध के समय तब चार राज्य कायम थे; मगध, कोसल, वत्स और अवन्ती। ये बराबर आपस में लड़ते रहते थे। वत्स का राजा उदयन पुराने ज़माने में मशहूर हो गया है। इसकी राजधानी इलाहाबाद जिले में कौशाम्बी थी। उदयन को एक बार अवन्ती के राजा प्रद्योत ने कैद कर लिया। उदयन वीणा बहुत अच्छी बजाता था, इससे प्रद्योत अपनी लड़की वासवदत्ता को वीणा सिखाने के लिए उसे अपने महल में बुलाने लगा। एक रात उदयन वासवदत्ता को लेकर हाथी पर कौशाम्बी भाग गया। वत्स और अवन्ती के राज्य बहुत दिनों तक कायम न रह सके।

कोसल अवध को कहते थे। उसकी राजधानी श्रावस्ती थी। कोसल भी धीरे-धीरे मगध में मिल गया। बुद्ध के समय मगध का राजा बिम्बसार था, जो वर्धमान महावीर का रिश्तेदार था। उसकी राजधानी राजगृह थी, जिसे आजकल राजगिर कहते हैं। बिम्बसार का बेटा अजातशत्रु था। अजातशत्रु ने बड़े देश जीते और लिच्छवियों के साथ ही अपने 'पंचायती राज्यों' को भी उसने जीतकर मगध में मिला लिया। इस तरह धीरे-धीरे मगध भारत का सबसे बड़ा

राज यानी साम्राज्य बन गया और उसकी नई राजधानी सोन और गंगा पर पाटलिपुत्र बनी। आज उसे पटना कहते हैं।

मगध का राज्य बाद में एक शूद्र राजा के हाथ में आया, जिसका नाम महापद्मनन्द था। महापद्मनन्द बुद्ध के मरने के डेढ़ सौ बरस बाद हुआ था। कुछ विद्वानों का कहना है कि संस्कृत भाषा का सबसे सुन्दर व्याकरण बनाने वाला पण्डित पाणिनि पंजाब के पच्छिम युसुफ़ज़ई के शालातुर गाँव से आकर पाटलिपुत्र में महापद्मनन्द के ही दरबार में रहने लगा था। बौद्धधर्म के प्रचार से समाज की निचली पांत के लोग भी ऊपर उठ आये थे और अपना संगठन करने लगे थे। ब्राह्मण-क्षत्रियों से भी उन्होंने लोहा लिया था। महापद्मनन्द की सफलता इसी से हुई थी। उसने क्षत्रिय राजाओं को उखाड़ फेंका। परन्तु वह बड़ा निर्दयी था और प्रजा ने उसके साथ भी विद्रोह किया।

इन्हीं दिनों चन्द्रगुप्त मौर्य उस राजा का सेनापति था। उसने उसका राज्य छीन लेना चाहा, पर हारकर चन्द्रगुप्त को पश्चिम भागना पड़ा। तभी पाटलिपुत्र में पंजाब का रहने वाला एक बड़ा विद्वान् और बुद्धिमान् चाणक्य नाम का पण्डित रहता था। महापद्मनन्द ने कभी उसका अपमान किया था, जिससे खीझकर चाणक्य ने उसका नाश करने का
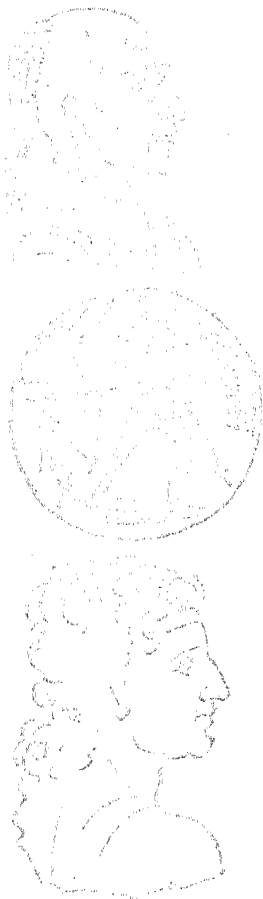
प्रण किया था । अब चाणक्य गुरु बना और चन्द्रगुप्त चेला ।

इसी बीच पंजाब में एक तूफान आया हुआ था । यूरोप के दक्खिन-पूरब में मकदूनिया नाम का एक छोटा-सा देश है । उसका राजा सिकन्दर सारे पश्चिमी एशिया और मिस्र को जीतता हुआ पंजाब तक चला आया था । पंजाब के छोटे-छोटे राजा और पंचायती राजाओं ने इंच-इंच ज़मीन के लिए उसका सामना किया था, पर उन्हें हारना पड़ा था । फिर भी अपनी बहादुरी का जो उन्होंने सबूत दिया, वह इतिहास में सोने के अक्षरों में लिखे जाने लायक है । राजाओं में पोरस का नाम बड़े गर्व से लिया जाता है । और पंचायती राज्यों में मालवों का ।

चन्द्रगुप्त

ब्यास नदी के किनारे मगध की ताकत से डरकर सिकन्दर की सेना ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया और सेना के ऐसा करने से सिकन्दर को मजबूर होकर हिन्दुस्तान छोड़ काबुल लौट जाना पड़ा। चाणक्य की सलाह से चन्द्रगुप्त ने तब सारा पंजाब जीत लिया और वहां से विदेशी-विजय के सारे निशान मिटा दिए। फिर चन्द्रगुप्त मगध की ओर बढ़ा और नन्द की गद्दी छीन ली। चाणक्य ने भी नन्दवंश का सर्वनाश कर अपना प्रण पूरा किया। चाणक्य ने 'अर्थशास्त्र' नाम की राज्य के इन्तज़ाम के बारे में एक पुस्तक लिखी, जिसके मुताबिक देश पर हुकूमत होने लगी। अब मगध का साम्राज्य चन्द्रगुप्त की विजयों से बहुत बढ़ गया था। पूरब और पश्चिम में वह समुन्दर से समुन्दर तक फैला था और अफ़गानिस्तान से दूर दक्खिन तक उत्तर से दक्खिन में।

चन्द्रगुप्त ने सिकन्दर के सेनापति सिल्यूकस को हराकर अफ़गानिस्तान के चारों सूबे छीन लिए और उसकी बेटी से ब्याह किया। तब से सिल्यूकस का यूनानी राजदूत मेगस्थनीज़ पाटलिपुत्र में ही रहने लगा। उसने इस देश की दशा

का हाल अपनी किताब 'इंडिया' में लिखा। वह लिखता है कि चन्द्रगुप्त की सेना बड़ी थी और वह पैदल, हयदल, गज-दल, रथदल और नौदल में बँटी हुई थी। उस साम्राज्य के शहरों का इन्तजाम छः प्रकार की सभाएँ करती थीं चाणक्य की किताब से भी पता चलता है कि साम्राज्य कई सूबों में बँटा हुआ था, जहां सम्राट् के गवर्नर हुकूमत करते थे।

चन्द्रगुप्त ने जिस वंश को स्थापित किया था, उसका नाम था मौर्यकुल। उस कुल का तीसरा राजा सारे संसार के राजाओं में महान् हुआ। वह चन्द्रगुप्त का पोता था—अशोक। उसका साम्राज्य इतना बड़ा था, जितना इस देश में कभी दूसरा न हुआ। परन्तु जब वह कलिंग, यानी उड़ीसा जीतने गया, तब उसे लड़ाई कितनी भयानक होती है, इसका पता चला। लाखों मारे गये, लाखों कैद हो गये, लाखों बरबाद हो गये। अशोक को यह बरबादी देखकर बड़ा दुःख हुआ और वह बौद्ध हो गया। उसने प्रतिज्ञा की कि वह कभी दूसरे का मुल्क नहीं छीनेगा और लड़ाई से देश जीतने के बजाय धर्म से लोगों के दिल जीतेगा। उसने अपनी प्रजा के साथ पिता का-सा व्यवहार किया। इस तरह की बातें राजाओं की पुरानी किताबों में लिखी थीं, पर कोई राजा उन्हें बरतता न था। अशोक ने पहले पहल प्रजा के साथ

अपने बेटों की तरह व्यवहार किया। उसने जानवरों का मारा जाना बन्द कर दिया। सब धर्मों के मानने वालों को बराबर समझा और अपनी प्रजा के आदर्श-धर्म की जानकारी के लिए अच्छे-अच्छे उपदेश लिखकर चट्टानों और पत्थर के ऊँचे खम्भों पर खुदवा दिए। ये उपदेश लोगों की बोली में लिखे गये। उस काल पत्थर की कला ने कितनी उन्नति की थी इसका पता हमें अशोक के इन खम्भों से लगता है। ये तांबे के-से चिकने हैं और इनके मस्तक पर बैठी मूरतें जीवित लगती हैं। सारनाथ के उसके खम्भे के शेरों की छाप आज हमारे राष्ट्र की छाप है। राष्ट्र के कागज़ों पर, हमारे झंडे पर, सब जगह उन्हीं शेरों की शक्ल छपी है।
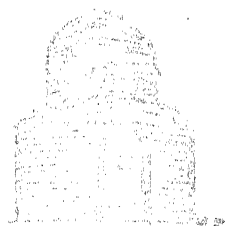
अशोक ने अपने राज्य में सड़कें बनवाईं। उनके ऊपर जानवरों और आदमियों के लाभ के लिए घनी छाया और फलों वाले पेड़ लगवाए, थोड़ी-थोड़ी दूर पर आरामगाह और कुएं बनवाये। अपने देश में तो उसने आदमी और जानवरों के लिए दवाखाने खुलवाये ही, दूर के देशों में भी उसने दवाओं के काम के पौधे लगवाये। बौद्धधर्म के प्रचार के लिए उसने दूर देशों को पंडित भेजे। बुद्ध के उपदेश अशोक के इन्तजाम से देश-विदेश चारों ओर फैल गये।

: ७ :

अशोक के मरने के करीब पचास साल बाद उस कुल के पुरोहित पुष्यमित्र शुंग ने मौर्यवंश के आखिरी राजा को मारकर मगध का राज्य छीन लिया। अब उत्तर में ब्राह्मण-साम्राज्य की नींव पड़ी। दक्खिन में आन्ध्र-सातवाहनों का पहले से ही बहुत बड़ा ब्राह्मण-साम्राज्य कायम था, जो कृष्णा नदी के तट से उठकर उत्तर-दक्खिन, पूरब-पश्चिम चारों ओर फैल गया था। आन्ध्रों में सबसे प्रतापी राजा पीछे चलकर गौतमीपुत्र हुआ। उत्तर में पुष्यमित्र को घर के बौद्ध शत्रुओं से भी लड़ना पड़ा; बाहर के शत्रुओं से भी। हिन्दुस्तान के उत्तर से ग्रीकों के हमले पहले से ही शुरू हो गए थे। अब राजा दिमित के दामाद मिलिन्द या मिनान्दर ने भी स्यालकोट से मगध पर हमला किया। पर उसे मुंह की खानी पड़ी। पुष्यमित्र ने उसे हराकर, सिन्ध तक पंजाब जीत लिया और दो-दो अश्वमेध यज्ञ किए।

बौद्धों के भारहुत-सांची के स्तूप और उनके सुन्दर द्वार-तोरण उसी काल बने।
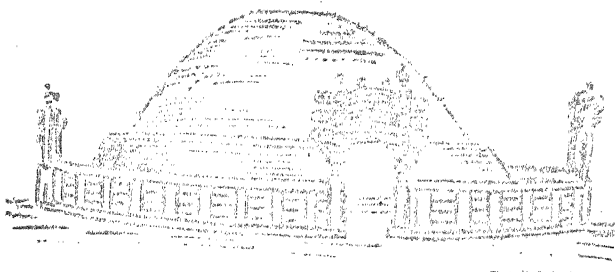
पुष्यमित्र के बाद देश में बड़ी उथल-पुथल मची। विदेशी हमलों से मगध का साम्राज्य कमजोर पड़ता गया। शुंगों का राज्य ब्राह्मण कण्वों ने छीना; फिर उनसे दक्खिन के आन्ध्रों ने छीन लिया। आन्ध्र भी मगध को बहुत दिनों न भोग सके, क्योंकि उत्तर की ओर से विदेशी हमलों का तांता लगा था। ग्रीक, शक और कुशान बराबर आते रहे और हमारे प्रान्तों को छिन्न-भिन्न करते रहे। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इससे कुछ लाभ ही हुआ। अपना समाज नए सिरे से गँठा और ग्रीकों ने तो कला में एक नई चलन ही चला दी। उसका केन्द्र तक्षशिला नगरी था, जहां हिन्दुस्तान का सबसे पहला विश्वविद्यालय कायम था। वहीं ग्रीकों ने अपने देश के नमूने की मूर्तियाँ बनाईं। तभी शायद
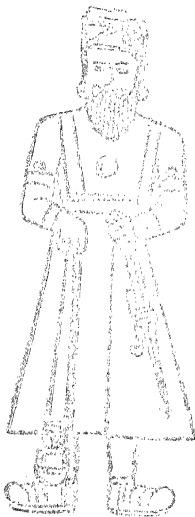
कनिष्क

बुद्ध की पहली मूर्ति भी बनी। उस काल का सबसे बड़ा राजा कनिष्क हुआ। उसने बौद्धधर्म का दूर-दूर तक प्रचार और बौद्धधर्म के पंडितों का आदर किया। उसके समय में भारतीय मूर्ति-कला की विशेष उन्नति हुई। उसका वंश कुशान कहलाता था।

लगभग उसी काल पच्छिमी एशिया में ईसा नाम का एक नौजवान इसरायल में शान्ति और प्रेम का उपदेश कर रहा था। उसके उपदेश बुद्ध के उपदेशों से बहुत-कुछ मिलते-जुलते थे। कुछ अजब नहीं कि उस पर बुद्ध का प्रभाव पड़ा हो। ईसा को यहूदियों ने जरूसेलम में फांसी दे दी। तभी से ईस्वी सन् चला, जिसका इस्तेमाल आज सारी दुनिया में है और हम भी यहां उसी का इस्तेमाल करते हैं। ईसा बुद्ध के करीब ५०० साल बाद हुआ था।

भारत में विदेशियों के खिलाफ ईस्वी सन् की चौथी सदी में बड़ा विद्रोह हुआ। नागों और हूणों ने कुशानों के हाथ से उत्तर भारत का राज्य छीन लिया। करीब तीन सौ बीस ईस्वी में चन्गुप्द्रत मगध की गद्दी पर बैठा और उसने ईस्वी सन् की ही भांति एक नया गुप्त संवत् चलाया। यह चन्द्रगुप्त मौर्य चन्द्रगुप्त की ही भांति एक नए वंश का चलाने वाला था, जिसका नाम गुप्तवंश पड़ा।

चन्द्रगुप्त के समय तक अभी लिच्छवियों का प्रताप कायम था और जब उसने लिच्छवियों की बेटी से ब्याह किया, तब उसका बड़ा यश फैला। उसके बेटे समुन्द्रगुप्त ने बाप के राज्य को खूब बढ़ाया। उसने उत्तर के राजाओं को तो उखाड़ ही फेंका, दक्खिन के राजाओं को भी हराया। उससे डरकर दूर-दूर के राजा उसे भेंट-उपहार भेजने लगे; उसकी दोस्ती का दम भरने लगे। चन्द्रगुप्त वीर तो था ही; कवि और गाने वाला भी ग़जब का था। उसके सिक्कों में से एक पर बीन बजाते हुए उसकी तस्वीर बनी है। उसने अश्वमेध यज्ञ भी किया।

समुद्रगुप्त का बेटा चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य था। उसने

नाम तो अपने दादा का ही पाया था, पर उसके तेज से प्रभावित होकर लोग उसे विक्रमादित्य यानी 'सूरज के तेज वाला' कहने लगे थे। इस विक्रमादित्य का यश इतना बढ़ा कि हमारे देश में उसके इन्साफ की आज हजारों कहानियां कही जाती हैं। उसके समय में विदेशियों ने कुछ उपद्रव किए, पर उसने उनके सरदार शकों का नाश कर 'शकारि' यानी 'शकों का दुश्मन' की नई उपाधि धारण की। इस प्रकार उसका राज्य मालवा और गुजरात-काठियावाड़ तक फैल गया और उसने मालवा में उज्जयिनी अपनी दूसरी राजधानी बनाई। संस्कृत के महान् कवि कालिदास, जिनका 'शकुन्तला' नाटक इतना मशहूर है, तभी हुए थे। कहते हैं कि उस विक्रमादित्य की सभा में 'नवरत्न' थे, जिनमें से एक कालिदास भी थे।

चन्द्रगुप्त के पोते स्कन्दगुप्त के समय उत्तर से हूणों ने देश पर भयानक हमला किया। हूण चीन के उत्तर-पच्छिमी सूबे के रहने वाले बड़े खूंखार लड़ाके थे, जिन्होंने सारे एशिया को कुचल डाला था। हाल ही उनके सरदार अत्तिला ने विशाल रोमन साम्राज्य को तोड़ डाला था और अब उन्हीं हूणों के हमलों ने गुप्त साम्राज्य को भी तहस-नहस कर डाला। स्कन्दगुप्त ने अपनी जान लड़ा दी मगर हूणों को वह रोक न सका। गुप्त-साम्राज्य टूट गया। हूणों के

सरदार तोरमान ने पच्छिमी हिंदुस्तान पर कब्जा कर लिया। उसके बेटे मिहिरकुल को मालवा के यशोधर्मा और मगध के बालादित्य ने हरा दिया। तब उसने धोखे से काश्मीर जीत लिया। मिहिरकुल बड़ा क्रूर था। हाथियों को पहाड़ की चोटी से गिराकर उनकी दर्दभरी चीखों में वह बड़ा मजा लिया करता था। काश्मीरियों ने बाद में उसे खत्म कर दिया।

गुप्तकाल भारत के इतिहास का स्वर्ण-युग 'सोने का युग' कहलाता है, क्योंकि तब साहित्य, विज्ञान, कला सब में बड़ी उन्नति हुई। ऊपर कहा जा चुका है कि कालिदास उसी काल में हुए थे। विशाखदत्त ने भी 'मुद्राराक्षस' नाम का अपना वह ग़ज़ब का नाटक लिखा, जिसमें चन्द्रगुप्त और चाणक्य के हाथों नन्दवंश के नाश की कहानी लिखी है। दर्शन के भी उस काल में बड़े-बड़े पंडित हुए, जैसे दिगनाग और वसुबन्धु। गुप्तों के ही पिछले काल में आर्यभट्ट ने पृथ्वी की गोलाई नापी और बराहमिहिर ने ज्योतिष पर अपनी प्रसिद्ध पुस्तक लिखी। कुछ ही काल बाद ब्रह्मगुप्त गणित का यशस्वी विद्वान् हुआ। कला में तो गुप्तकाल सारे भारत के इतिहास में अपना सानी नहीं रखता। अजन्ता के मशहूर चित्र तभी बने, जो संसार में अनोखे माने जाते हैं। पत्थर की मूर्तियां इतनी खूबसूरत बनीं कि देखने वाले आज

भी ठक से रह जाते हैं। उस काल धातुओं की ढलाई का काम भी बड़ा सुन्दर हुआ। तांबे और कांसे की भी हजारों बौद्ध मूर्तियां गुप्त-युग की कला का सबूत हैं। दिल्ली के

अजन्ता का एक चित्र

पास मेहरौली का लोहे का खम्भा तभी का बना है, जो आज डेढ़ हज़ार वर्ष बाद भी आंधी-पानी में खड़ा है और उस पर जंग नहीं लगा। गुप्त राजाओं के सिक्कों की खूबसूरती के तो बस क्या कहने! मालवा और गुजरात के गुप्त-राज में मिल जाने से पच्छिमी समुद्र की तिजारत से भी

देश को बड़ी आमदनी हो गई थी।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के शासन-काल में चीन से फाह्यान आया था। वह लिखता है कि देश में शान्ति थी, सुख था, चोर-डाकुओं का कोई डर न था और वह बगैर लुटे, देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक आया-गया था। वह लिखता है कि लोग बड़ी सफाई से रहते थे, शराब नहीं पीते; मांस, प्याज, लहसुन नहीं खाते। अपने घरों में चोरी

चीनी यात्री फाह्यान

का डर न होने से ताले तक नहीं लगाते। राजा वैष्णव-धर्म का मानने वाला था, पर बहुत उदार था और दूसरे धर्म के मानने वालों की भी कद्र करता था। मगर फाह्यान ने अछूतों का जो चित्र खींचा है, वह उस 'सोने के युग' के लिए बड़े शर्म की बात है। वे लोग शहर से बाहर रहते थे और दिन में जब कभी भीतर आते, तब लकड़ियां बजाकर लोगों को आगाह कर दिया करते थे, जिससे वे हट जायें और उनसे छू जाने से अपवित्र न हो जायें।

: ६ :

गुप्तों के बाद उत्तर-भारत में, ६०३ ईस्वी में हर्ष का साम्राज्य स्थापित हुआ। हर्ष थानेश्वर का राजा था।
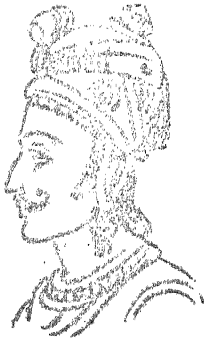
उसके पिता ने हूणों को हराया था। हर्ष की बहिन कन्नौज के राजा से ब्याही थी। पर मालवा के देवगुप्त और बंगाल के शशांक ने उसके पति को मारकर कन्नौज उससे छीन लिया। हर्ष का बड़ा भाई यह सुनकर जब बहिन का बदलालेने पूरब की ओर बढ़ा, तो वह भी धोखे से मार डाला गया। थानेश्वर का राजा अब हर्ष था, जो शत्रुओं से लड़ते हुए कन्नौज की ओर बढ़ा। कन्नौज पर उसका अधिकार हो गया। फिर हर्ष ने सारे उत्तर भारत को जीत लिया। उसे केवल एक बार दक्खिन के राजा पुलकेशी चालुक्य से हार खानी पड़ी।

हर्ष के शासन-काल में चीनी यात्री हुएनसांग भारत आया और यहां की दशा का अपनी पुस्तक में बयान किया।

वह बौद्ध था। हर्ष ने उसकी बड़ी आवभगत की। हर्ष भी बौद्ध था और हर पांचवें साल कुम्भ के मेले में पांच वर्ष का सारा खजाना दान कर दिया करता था। हुएनसांग ने उस काल के संसार के सबसे बड़े हिन्दुस्तानी विश्वविद्यालय नालन्दा का बड़ा बखान किया है। वह लिखता है कि वहां सारी विद्याएँ पढ़ाई जाती थीं। दस हजार विद्यार्थी थे और एक ही समय सौ विद्वान् सौ विषयों पर भाषण देते थे। नालन्दा के विद्यालय में दाखिला बड़ी मुश्किल से होता था।

: १० :

दक्खिन में अनेक राज्य थे, जिनमें चार का बयान लिख देना यहाँ मुनासिब होगा । आन्ध्रों का हाल पहले लिखा जा चुका है । चोल, पाण्ड्य, पल्लव और चेर बाकी चार राज्य थे । पाण्ड्यों और चोलों के नाम उत्तर में भी बहुत प्राचीन काल से जाने हुए थे । पांड्य बिल्कुल दक्खिन में थे । उनकी राजधानी मदुरा थी । कालिदास ने लिखा है कि वे इतने प्रबल थे कि दक्खिन की ओर जाते हुए सूरज का भी तेज उनके डर से मन्द पड़ जाता था । अनेक बार उन्होंने अपने पास के चोलों और केरलों को हराया था । उनके राज्य से दूर पच्छिम तक मोती और गरम मसाले जाते थे । चोल पाण्ड्यों के उत्तर में थे और एक बार तो उन्होंने करीब-करीब सारे दक्खिन भारत को जीत लिया था । इतना ही नहीं, उनके राजा राजेन्द्रचोल ने तो एक बार मध्यभारत को रौंदते हुए बंगाल तक पर धावा किया था। चोलों के पास बड़ा शक्तिशाली जहाजी बेड़ा था, जिससे उन्होंने समुद्र के अनेक द्वीप जीते थे । चेर दक्खिन भारत के पश्चिमी भाग केरल के स्वामी थे। वे कभी चोलों या पाण्ड्यों के बराबर ताकतवर

न हो सके। परन्तु कांची के पल्लवों का निश्चय ही दक्खिन में एक समय बड़ा दबदबा बढ़ा। पल्लवों ने भी अपने राज्य का काफी ज्यादा विस्तार किया था। दक्खिन भारत की सबसे बड़ी बात उसके गांवों के शासन की है। वैसे वे पंचायती राज्य थे। हर गांव में पंचायत थी, जो अपनी अनेक सभाओं के जरिये हर चीज का इन्तजाम करती थी। खेत, लगान, दान, चरागाह, कुएँ, तालाब, मवेशी, रोजगार सभी पर उन सभाओं की नजर रहती थी और अनेक मेम्बर वोट के जरिये चुने जाते थे। चोलों, पाण्ड्यों और पल्लवों ने दक्षिण में बड़े-बड़े मन्दिर बनवाये, जो कला और मेहनत के ग़जब के नमूने हैं।

: ११ :
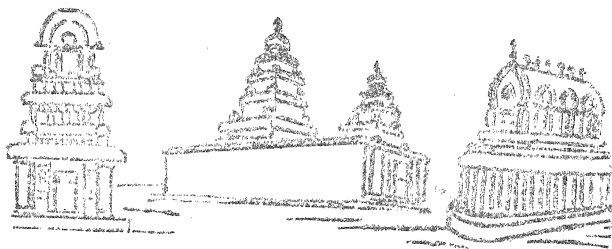
हर्ष के बाद उत्तर भारत में राजपूतों के अनेक राज्य कायम हुए। राजपूत कबीलों का जीवन बिताते थे। हर कबीले का अपना सरदार होता था। विद्वानों का अनुमान है कि वे ज्यादातर देशी-विदेशी जातियों के मिलने से बने थे। वे बड़े सूरमा थे और उन्होंने सदियों हमारे मुल्क की दुश्मनों से रक्षा की। उनमें विशेष प्रसिद्ध कन्नौज के गुर्जर-प्रतिहारों और राठौर, सांभर के चौहान और दक्खिन में वातापी के चालुक्य, मान्यखेट के राष्ट्रकूट और मालवा के परमार थे। बंगाल में पालों का राज्य था, जो बौद्ध और शूद्र थे। अब पाटलिपुत्र की जगह कन्नौज हिन्दुस्तान की राजधानी थी और उसी को जीतने के लिए उत्तर और दक्खिन के राजाओं की कशमकश होती रहती थी। एक बार तो कन्नौज के मोर्चे पर प्रतिहार, पाल और राष्ट्रकूट तीनों जूझे थे।

पाल बंगाल-बिहार के राजा थे और पच्छिम में कन्नौज तक धावा करते थे। देवपाल और धर्मपाल उनमें बड़े प्रसिद्ध हुए। उन्होंने नालन्दा आदि विश्वविद्यालयों को बड़ा

धन दिया। राष्ट्रकूट दक्खिन के राजा थे और एक समय तो उनकी तलवार दूर-दूर तक मार करने लगी थी। एलोरा के मन्दिर उन्हीं के बनवाये हुए हैं। उनमें सबसे महान् गोविन्द और कृष्ण हुए। चालुक्यों ने उत्तर-दक्खिन, दोनों ओर अपना यश फैलाया था और उनके महान् राजा पुलकेशी ने हर्ष को भी धूल चटा दी थी। परमार साहित्य और युद्ध दोनों में मशहूर हुए। मुन्ज और राजा भोज की कहानियों से तो हिन्दुस्तान का साहित्य भरा पड़ा है। भोज परमारों की राजधानी उज्जैनी से धारा नगरी ले गया। उसने करीब साठ बरस राज्य किया, बड़ी लड़ाइयां लड़ीं और बड़ी किताबें लिखीं। विक्रमादित्य की ही तरह उसकी सभा भी पण्डित और कवियों का अखाड़ा थी। प्रतिहार जोधपुर के पास से उठे थे, पर उन्होंने बाद में कन्नौज को जीतकर अपनी राजधानी बनाई थी और उज्जैन तक धावे किए थे। उनके बाद कन्नौज के राजा राठौर हुए, जिनमें सबसे महान् राजा विजयचन्द था। उसी वंश का जयचन्द बाद में बड़ा प्रसिद्ध हुआ। उसने हिन्दुस्तान के काफी

पृथ्वीराज चौहान

सूबे जीते । संस्कृत का महाकवि श्रीहर्ष उसी के दरबार में रहता था । पृथ्वीराज चौहान सांभर का था और अब वह धीरे-धीरे उत्तर के आसमान में सूरज की तरह उठ रहा था । उसके पुरखे बीसलदेव ने अजमेर पर भी कब्जा कर लिया था और पृथ्वीराज का तो दिल्ली पर भी अधिकार हो गया था ।

: १२ :

सातवीं सदी में अरब के रेगिस्तान में एक चिनगारी चिटकी, जिसने धीरे-धीरे मशाल का रूप धारण किया। वह मशाल पैगम्बर मुहम्मद थे। मुहम्मद मक्का में जन्मे थे और वहां की कुरीतियों को समझते थे। वहां के लोगों की हालत सुधारने पर उन्होंने कमर कसी। वहां के लोग मूरतें पूजते थे, लड़कियों को मार डालते थे, जाहिल और अन्धविश्वासी थे। मुहम्मद ने आवाज उठाई—'मूरत मत पूजो, एक अल्लाह को मानो, जो सबका बननाने वाला और मालिक है।' यह ऐसी आवाज थी, जिसे किसी ने पहले न सुना था। मुहम्मद पर उनका गुस्सा इतना बढा कि उनको मक्का छोड़ मदीने भागना पड़ा। पर धीरे-धीरे उनकी आवाज और ऊँची होती गई। लोग उनके झंडे के नीचे आते गए और मुहम्मद की ताक़त बढ़ती गई। मुहम्मद साहब ने जिस मज़हब को चलाया, वह इस्लाम कहलाया; उसको मानने वाले मुसलमान कहलाए। कुल अस्सी साल के भीतर चीन की सीमा से पश्चिमी यूरोप तक सारे मुल्क अरबों के

अधीन हो गए। अरबों की एक सेना अठारह बरस के मुहम्मद-बिन-कासिम की अधीनता में सिन्ध भी आई और उसने तुरन्त सिंध पर कब्ज़ा कर लिया। अरब लोग जहां-जहां गए; वहां-वहां उन्होंने ज्ञान का प्रकाश फैलाया। सिंध में भी उनके लिए लगान ब्राह्मण वसूल करते थे और मन्दिरों की, सरकार की ओर से मरम्मत कराई जाती थी। इसी कारण ७१२ ईस्वी में ही जो वह छोटा-सा इस्लाम का राज्य कायम हुआ तो वह अपने चारों ओर हिन्दू राजाओं के रहते भी सदियों बना रहा। तिजारत के सिलसिले में अरब लोग बहुत दिनों पहले से मालावार और पच्छिमी हिन्दुस्तान आते रहे थे, पर हमले के रूप में यह पहला था।

धीरे-धीरे इस्लाम के झंडे के नीचे तुर्क, तातार, पठान और दूसरे लोग भी लूट के फायदे के लिए आ खड़े हुए और जहां-जहां वे गए, वहां-वहां उन्होंने इस्लाम का नाम बदनाम किया। मजहब के नाम पर वे दूसरों को लूटते थे, अपनी हुकूमत मजबूत करते थे। ऐसा ही एक लुटेरा ग़जनी का सुल्तान बना। उसका नाम सुबुक्तगीन था। उसने एकाध बार हिन्दु-

सुबुक्तगीन

स्तान पर धावा किया। पर उसके कट्टर बेटे महमूद ने तो हमलों का तांता ही बांध दिया। उसने हमारे मुल्क पर सोलह हमले किए। और हमारे नगरों और मन्दिरों को लूटा। उसका आखिरी हमला सोमनाथ पर हुआ। उसके साथ संस्कृत का प्रसिद्ध विद्वान् अलबरूनी भी भारत आया था। उसने अपनी किताब में यहाँ का हाल लिखा। महमूद के ही जमाने में धारा का मशहूर राजा भोज हुआ। तभी काश्मीर की रानी दिद्दा भी राज्य करती थी। महमूद के हमलों की चोट पहले उन साहियों पर पड़ी, जो कभी शक और हूण थे, पर बाद में क्षत्रिय और ब्राह्मण मान लिए गए थे। उन्हीं में जयपाल और आनन्दपाल थे। इस प्रकार जो कभी भारतीय न थे, उन्होंने भी इस देश को अपना मान संतरी बनकर सदियों उसकी रक्षा की। महमूद के दरबार में तिलक नाम का एक काश्मीरी भी था। वह महमूद के वज़ीर का सेक्रेटरी था। जब महमूद का एक सरदार बाग़ी होकर पंजाब में जमकर बैठ गया और किसी से सर न हुआ, तब तिलक ने बगैर फौज़ के उसका सिर महमूद के सामने लाकर हाज़िर कर दिया। पंजाब तब महमूद का हो गया।

बारहवीं सदी में काबुल की घाटी पर गोरीवंश का अधिकार हुआ। सदी के अन्त में शहाबुद्दीन गोरी ने हिन्दुस्तान पर हमला किया। पहले तो उत्तर भारत के हिन्दू राजाओं ने पृथ्वीराज चौहान के झंडे के नीचे लड़कर उसे हरा दिया, पर दूसरे साल वह फिर आया। पृथ्वीराज बड़ा घमंडी था। उसने कन्नौज के राजा जयचन्द को उसकी लड़की छीनकर नाराज़ कर दिया था। इससे जयचन्द उसकी मदद को न आया। पृथ्वीराज लड़ाई में मारा गया और दिल्ली पर पठानों का अधिकार हो गया। गोरी अब सेना तैयार कर कन्नौज की ओर बढ़ा, क्योंकि कन्नौज का राज्य उस वक्त उत्तर भारत के राज्य में सब से शक्तिमान था। जयचन्द अब तक बूढ़ा हो चुका था, पर अपनी सेना के साथ लड़ता हुआ मारा गया। गोरी को भी हिन्दुस्तान से लौटते समय पंजाब के बक्खरों ने मार डाला।

शहाबुद्दीन गोरी

महमूद गज़नी तो केवल इस देश को लूटने आया था, पर गोरी यहाँ अपना राज कायम करने आया था। उसके कोई लड़का न होने के कारण उसका सरदार कुतुबुद्दीन दिल्ली के तख्त पर बैठा। कुतुबुद्दीन ने ही उत्तरी हिन्दुस्तान के अनेक भाग जीते थे। वह पहले गोरी का गुलाम था, जो धीरे-धीरे उसका सरदार हो गया था। उसने दिल्ली में अपने नाम से

कुतुबुद्दीन

कुतुबमीनार

कुतुबमीनार नाम का ऊँचा स्तम्भ खड़ा किया।

उन्हीं दिनों बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन को भगाकर गोरी के दूसरे सरदार मुहम्मद-बिन-बख्तियार ने बंगाल जीत लिया। कहते हैं कि उसके पास कोई खास
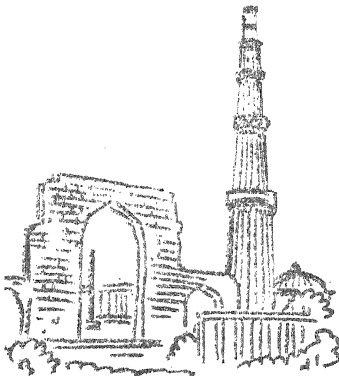
सेना न थी, महज़ अठारह घुड़सवार थे। इससे पता चलता है कि देश की तब क्या दशा थी। यानी कि जनता को देश की राजनीति से कोई सरोकार न था। वह राजाओं का काम था। जनता राजनीति से अलग रखी जाती थी और रहती थी। लक्ष्मणसेन उस सेन वंश का आखिरी राजा था, जिसका अधिकार पालों के बाद बंगाल पर कायम हुआ था। लक्ष्मण-सेन के दरबार में संस्कृत का सबसे मधुर कवि जयदेव हुआ, जिसने 'गीत-गोविन्द' लिखा।

दिल्ली की गद्दी पर कुतुबुद्दीन के बाद पहले अल्तमश बैठा फिर अल्तमश की बेटी रज़िया बैठी। रज़िया दिल्ली के तख्त पर बैठने वाली पहली औरत थी, पर वह ज़माना औरतों का न था और सरदारों की बगावत ने उससे गद्दी छीन ली।

रज़िया

शहाबुद्दीन गोरी ने जिस वंश का हिन्दुस्तान में आरंभ किया, उसे गुलाम-वंश कहते हैं, क्योंकि उसके सभी सुल्तान पहले गुलाम रहे थे। उनमें सबसे शक्तिशाली और लायक

बलबन था, जो उस वंश का आखिरी बादशाह था। वह मिजाज का बड़ा सरल था, पर कभी-कभी निर्दय भी हो जाता था। परन्तु उसने दिल्ली से बंगाल तक अपनी हुकूमत का सिक्का बैठा दिया और देश से चोरी और डाका दूर कर दिया। उसके जमाने में मंगोलों ने कई हमले किए। इसी से वह कभी दिल्ली छोड़ता भी न था। एक बार उसके बाहर चले जाने पर मंगोलों ने हमला कर उसके बेटे मुहम्मद को मार डाला। यही मुहम्मद हिन्दी-उर्दू का पहला कवि खुसरो का संरक्षक था। बेटे के मरने का दुःख बलबन न भूल सका और उसी दुःख से वह भी मर गया।

बलबन के बाद दिल्ली में एक तरह से अराजकता छा गई। कोई ऐसा मजबूत हाथ न था, जो ज़ोर से तलवार पकड़ता और शान्ति स्थापित करता। अन्त में लोगों ने बूढ़े और दयावान् जलालुद्दीन खिलजी को पंजाब से बुलाकर गद्दी पर बिठा दिया। दयावान् और कमजोर दिल के आदमी के लिए उस वक्त दिल्ली का तख्त न था। और अपनी कमजोरी का नतीजा उस बूढ़े सुल्तान को भुगतना पड़ा। उसका भतीजा और दामाद अलाउद्दीन इलाहाबाद के
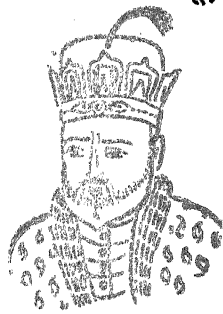
जलालुद्दीन खिलजी

पास सूबेदार था। एक दिन वह सेना लेकर दक्खिन में देव-गिरी जा पहुंचा और वहाँ के यादव राजा को उसने जीत लिया। वहाँ से वह अनन्त धन लेकर लौटा और जब दिल्ली में उसके स्वागत के लिए उसका चाचा बढ़ा, तब अलाउद्दीन के आदमियों ने उसे मार डाला। फिर अला-उद्दीन दिल्ली की गद्दी पर बैठा।

अलाउद्दीन बहुत सख्त मगर सफल सुल्तान था। उसने हिन्दू-मुसलमान दोनों पर सख्ती की। हिन्दुओं पर तो काफी अत्याचार किया। वह पढ़ा-लिखा तो न था, पर राजकाज को अच्छी तरह समझता था। उसने बाजार में सब चीजों की दर निश्चित कर दी। चीजें काफी सस्ती हो गईं।

अलाउद्दीन ने दूर गुजरात तक जीता। मध्यभारत पर राज करने वाला वह पहला मुसलमान बादशाह था। उसका गुलाम सेनापति मलिक काफूर देश-परदेश जीतता कुमारी अंतरीप तक जा पहुंचा। अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर भी हमला किया, पर पहले हमले में उसे मुंह की खानी पड़ी। वह रानी पद्मिनी

पद्मिनी

की सुन्दरता सुनकर वहां गया था, पर जब घेरा डालकर भी वह चित्तौड़ को न ले सका, तब उसने पद्मिनी को केवल आंख भर देखकर लौट जाने का वचन दिया। राजपूतों ने उसे पद्मिनी को शीशे में दिखा दिया, पर उसके रूप का उसपर

ऐसा असर पड़ा कि मन में उसने उसे अपनी बीवी बनाने का निश्चय कर लिया। चित्तौड़गढ़ से लौटते समय उसने पद्मिनी के पति भीमसिंह को कैद कर लिया और पद्मिनी के पाने पर ही भीमसिंह को छोड़ना स्वीकार किया। राजपूतों ने भी इस धोखे का बदला धोखे ही से दिया। पद्मिनी के आने की बात कहकर उन्होंने डोलियों में जाकर खेमे पर हमला किया और उसे मार भगाया। अलाउद्दीन एक बड़ी सेना लेकर फिर लौटा। अब की बार जो उसने चित्तौड़ का

घेरा डाला तो राजपूतों का नाका-नाका बन्द कर दिया। अन्न और जल चुक जाने पर राजपूत गढ़ का फाटक खोल बाहर निकले और एक-एक सैनिक वीरता से लड़कर मरा। अलाउद्दीन जब पद्मिनी को पाने की खुशी में गढ़ में घुसा तो उसे सिवा थोड़ी राख के कुछ हाथ न आया, क्योंकि पद्मिनी गढ़ की दूसरी नारियों के साथ चिता में जल मरी थी। ऐसे मौकों पर राजपूत नारियां अपनी आबरू बचाने के लिये ऐसा ही करती थीं। इस प्रकार जल जाने को 'जौहर' कहते थे।

मुहम्मद तुगलक

अलाउद्दीन के मरने पर खिजली वंश का राज उखड़ गया और धीरे-धीरे उस पर तुगलकों का अधिकार हुआ। तुगलक वंश का सबसे बड़ा सुल्तान मुहम्मद तुगलक था। मुहम्मद तुगलक बड़ा पंडित और ज्ञानी था, गणित और तर्क का गहरा जानकार था। पर वह दुनिया को समझ न सका और कुछ ऐसे काम किए, जिससे लोगों ने उसे पागल तक कह डाला। उसने चीन जीतने को हिमालय पार सेना भेजी जो बर्फ़ में गल मरी। मंगोलों से तंग आकर उसने एशिया जीतने के मनसूबे बांधे। इस प्रकार बिना किसी

लाभ के सेना पर जो इतना खर्च हुआ तो खजाना खाली हो गया। और तब उसने तांबे के सिक्के चलाये जिससे हालत और खराब हो गई। अपनी राजधानी उसने दिल्ली से हटाकर दूर दक्खिन में देवगिरि में स्थापित की और उसका नाम दौलताबाद रख दिया। उसने दिल्ली की जनता को मजबूर करके दौलताबाद भेजा। अधिक लोग तो राह में ही मर गए। फिर मजबूर होकर उन्हें दिल्ली लौट जाने का हुक्म देना पड़ा, जिससे और भी जनता मरी। उन्हीं दिनों उत्तरी अफ्रीका का प्रसिद्ध यात्री इब्नबतूता हिन्दुस्तान आया हुआ था। उसने दिल्ली की दशा का बड़ा दर्दनाक बयान किया है। मुहम्मद के बाद उसका भतीजा फिरोजशाह सुल्तान हुआ। उसका शासन अधिक जिम्मेदारी का था। उसने बड़े-बड़े महल और गढ़ बनाये। जागीरदारों की प्रथा जारी की पर लाखों

फिरोजशाह

गुलामों के बल पर उसने राज किया। उसके बाद देश की वही हालत हुई जो बलबन और अलाउद्दीन के बाद हुई थी। बड़ी अशान्ति मच गई।

उस अशान्ति में तैमूरलंग के हमले ने और गड़बड़ मचा दी। तैमूरलंग समरकंद का बादशाह था और सारा मध्य-एशिया जीत चुका था। अब उसने उत्तर भारत पर हमला कर पंजाब और दिल्ली को वीरान कर दिया।

इस काल वैष्णव और शैव धर्म काफी जोरों पर थे। रामानुज, रामानन्द आदि उस काल के आस-पास ही हुए थे। इस रामानन्द के ही कबीर मुसलमान चेले थे। उन्हीं दिनों इस्लाम के सूफी मत का भी प्रचार इस देश में हुआ। सूफी मत अपने देश के वेदान्त की भांति सबको ईश्वरमय मानता था। कबीर पर भी उसका गहरा असर पड़ा था और उनके प्रचार से हिंदू और मुसलमान काफी पास आए। कबीर, हिन्दू और इस्लाम, दोनों विचारों के संघर्ष के परिणाम थे। उन्होंने दोनों की कुरीतियों पर चोट की और दोनों ने कबीर को पूजा। कबीर का समाज पर गहरा और बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। उस जमाने की उथल-पुथल में
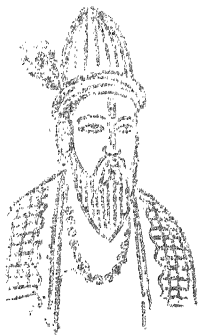
कबीर

हिन्दू राजा ऊपर आ गए। चित्तौड़ के राणा कुम्भा ने गुजरात और मालवा दोनों की मिली-जुली सेनाओं को एक

राणा सांगा

कीर्ति-स्तम्भ

साथ हराया और उस जीत की याद में चित्तौड़गढ़ के भीतर अपना कीर्ति-स्तम्भ खड़ा किया। उसी के वंशज और राणा प्रताप के दादा राणा सांगा ने सबसे बड़ा राजपूत साम्राज्य, मालवा और गुजरात से पंजाब तक, खड़ा किया।

दिल्ली में पहले सैय्यद सुल्तान हुए, फिर लोधी। इब्राहीम लोधी, लोधियों का अन्तिम सुल्तान था। उसके आचरण से उसके सरदार और हिन्दू राजा इतने बिगड़ उठे कि उन्होंने काबुल के मुग़ल बादशाह बाबर को बुला भेजा। बाबर तैमूर और चंगेज़ का वंशज था। और तेरह साल

की उमर से ही फरगना में लड़ाइयां लड़ता रहा था। बार-बार उसने अपने पुरखों का तख्त जीता, बार-बार उसके दुश्मनों ने उसे वहां से भगा दिया। तब उसने काबुल पर कब्ज़ा कर लिया। अब दिल्ली के अमीरों और राणा सांगा के बुलाने पर वह हिन्दुस्तान आया और इब्राहीम को हराकर वह दिल्ली की गद्दी पर बैठा। उस समय हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा राजा राणा सांगा था। बगैर उसे जीते

बाबर

बाबर का राज्य सुरक्षित नहीं हो सकता था। राणा सांगा बड़ा वीर था, उसके बदन पर अस्सी घाव थे। उसके एक बाँह न थी, एक आंख न थी। सीकरी के मैदान में दोनों में भयानक लड़ाई हुई। सूरमा राजपूतों ने तोपों का मुंह बन्द कर दिया। पर अन्त में उनकी हार हुई और बाबर सारे हिंदुस्तान का बादशाह हुआ। उन्हीं दिनों ग्वालियर के राजा से बाबर के बेटे हुमायूं ने प्रसिद्ध कोहेनूर हीरा प्राप्त किया।

: १४ :

हुमायूं कमजोर था। बिहार के पठान शेरशाह ने उसे भगाकर दिल्ली का तख्त उससे छीन लिया। उसने मालवा, गुजरात, राजपूताना और पंजाब जीता। शेरशाह बड़ा लायक बादशाह था। उसने ज़मीन की नाप कराई, देश को सूबों में बांटा, सड़कें बनवाईं, डाक का इन्तजाम किया और रुपया-सिक्का चलाया। उसी के समय मुसलमान सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी हुआ, जिसने हिन्दी का प्रसिद्ध काव्य 'पद्मावत' लिखा। शेरशाह के मरते ही हुमायूँ ईरान से लौटा और उसने दिल्ली के तख्त पर फिर से कब्जा कर लिया। पर कुछ ही दिनों बाद वह महल की सीढ़ियों से गिरकर मर गया। उसके बाद उसका तेरह साल का लड़का अकबर दिल्ली का बादशाह हुआ, जो तब पैदा हुआ था, जब हुमायूँ दर-दर भटक रहा था।

हुमायूं
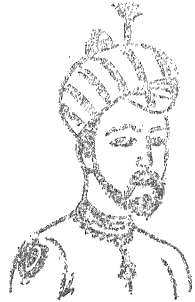
अकबर अशोक की ही तरह संसार के सबसे बड़े बादशाहों में से है। अशोक की ही भांति उसने सारे धर्मों को बराबर माना। उनकी अच्छी बातें इकट्ठी कर 'दीन-ए-इलाही' नाम का अपना एक नया मज़हब चलाया। वह पढ़ा-लिखा न था, पर बड़ा बुद्धिमान् था और पण्डितों का बड़ा आदर करता था। उसके दरबार में नव-रत्न थे, जिनमें अबुल-फजल और फैजी बड़े लायक थे। अकबर ने

अकबर

हिन्दुओं को भी मुसलमानों के बराबर समझा और उन्हें ऊँचे-ऊँचे ओहदे दिए। उसने मुग़लों का साम्राज्य और बढ़ाया और उस पर बड़ी बुद्धिमानी से शासन किया। हिन्दू घरानों में ब्याह करने की भी उसने रीति चलाई, जिससे बहुत से राजपूत राजा उसके मित्र हो गए। मेवाड़ ने फिर भी उसके सामने सिर न झुकाया और उसके राजा राणा प्रताप पच्चीस बरस तक आजादी की लड़ाई लड़ते रहे। अकबर
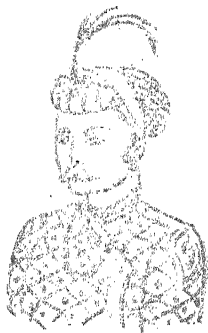
राणा प्रताप

ने चित्तौड़ पर भयानक हमला कर उसे बरबाद कर दिया। चित्तौड़ अब तीसरी बार बरबाद हुआ था। पहले उसे अलाउद्दीन ने तोड़ा था, दूसरी बार गुजरात के बहादुर ने और तीसरी बार अब अकबर ने। प्रताप ने हल्दीघाटी में एक बार फिर मुगलों के दांत खट्टे किए। राणा प्रताप का नाम देशभक्त वीरों की गणना में सबसे पहले लिया जाता है।

अकबर के ही समय, सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास आदि हुए। सिक्खों के गुरु नानक बाबर के ही समय में मर चुके थे। अकबर ने करीब पचास बरस राज्य किया।

गुरु नानक

अकबर के बाद जहांगीर बादशाह हुआ। यह बड़ा न्यायी और कला का जानकार था। उसके शासनकाल में चित्रविद्या ने बड़ी उन्नति की। मुग़ल-काल के

सुन्दर से सुन्दर चित्र उसके समय बने। प्रसिद्ध नूरजहां उसी

जहाँगीर नूरजहां

की रानी थी और राज-काज ज्यादातर वही देखती थी। जहां-गीर के ही जमाने में यूरोपियन लोग उसके दरबार में जगह पाने की कोशिश करने लगे थे। तभी सर टामस इंग्लैंड का दूत बनकर आया था। यूरोप की कई कम्पनियां तभी हिन्दुस्तान के साथ तिजारत करने लगी थीं। बुढ़ापे में जहांगीर को
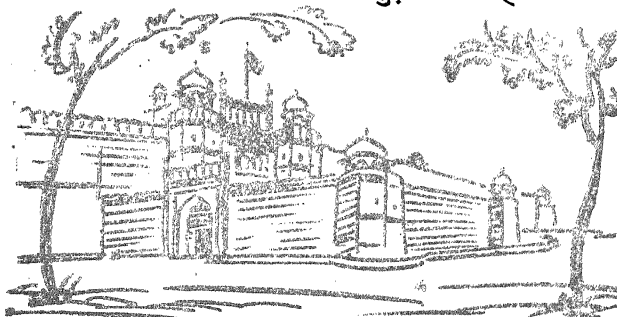
लाल-किला

उसके बेटे शाहजहां ने कैद कर लिया। शाहजहां कला का
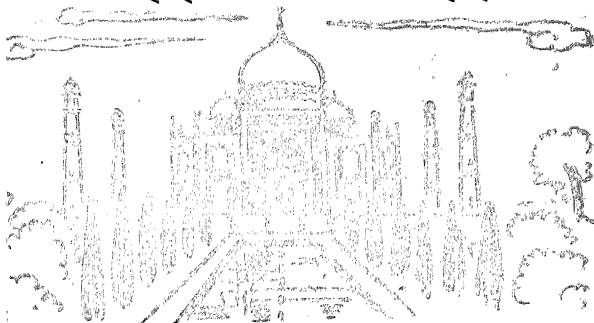
बड़ा ऊंचा पारखी था। उसके जमाने में अच्छे से अच्छे चित्र

शाहजहां मुमताजमहल

बने। अच्छी से अच्छी इमारतें बनीं। उससे दिल्ली का लाल-किला बनवाया, वहां की जामा-मस्जिद बनवाई और दुनिया का अचरज, आगरे में वह मुमताजमहल का मकबरा, जो ताजमहल के नाम से मशहूर है। शाहजहां के बुढ़ापे में

उसके बेटों ने भी बगावत की और औरंगजेब ने उसे कैद कर लिया। स्वयं वह उसके बनवाये हीरे-जवाहरात-जड़े प्रसिद्ध 'तख़्त-ताऊस' पर बैठा।

औरंगजेब

औरंगजेब ने मुग़ल साम्राज्य को और बढ़ाया। पर वह कट्टर मुसलमान था और हिन्दू-मुसलमानों में भेद करता था। उसने हिन्दुओं के अनेक मन्दिर तोड़े, जिनका नतीजा यह हुआ कि राजपूत और मराठे दोनों उसके दुश्मन हो गए। वह वीर था और सामूगढ़ की लड़ाई में उसने अपने हाथी के पैरों में जंजीर डालकर इसलिए जमीन में गड़वा दी कि हाथी मैदान से कहीं भाग न जाए। वह जिंदगी भर लड़ाइयां ही लड़ता रहा। उन्हीं के सिलसिले में वह दक्खिन में मरा।

शिवाजी

दक्खिन में कई मुसलमान रियासतें थीं जो विजयनगर के हिन्दू साम्राज्य को तोड़कर खड़ी हुई थीं। उन्हीं रियासतों को जीतने के लिए औरंगजेब दक्खिन में बीस बरस तक लड़ता रहा था। उन्हीं में से एक बीजापुर के हिन्दू सरदार शाहजी का लड़का शिवाजी था।

उसने औरंगज़ेब और मुसलमान रियासतों की नीति से बिगड़कर मरहठों का राष्ट्र बनाने का निश्चय किया। मरहठे किसानों को संगठित कर उसने उन रियासतों पर धावे करने शुरू किए और गढ़ पर गढ़ जीतकर एक मरहठा राज्य ही कायम कर लिया।

इस मरहठा राज्य का शासन बड़ी नीति से होता था। मरहठों का यह साम्राज्य दिन पर दिन बढ़ता गया और शिवाजी के बाद तो वह फैलकर पंजाब तक जा पहुँचा। अठारहवीं सदी में हिन्दुस्तान में सबसे शक्तिवाले मरहठे थे। शिवाजी की बुद्धिमानी, शक्ति और साहस ने पिछड़े मरहठों का राष्ट्र बना दिया। औरंगजेब के पीछे मुग़ल बादशाह और हैदराबाद के निजाम मरहठों के नाम से कांपने लगे। बाद में बाजीराव पेशवा उनका सबसे बड़ा नेता हुआ। मरहठों की शक्ति पानीपत की लड़ाई में अहमदशाह अब्दाली ने तोड़ी। औरंगजेब के बाद भी मुग़ल बादशाह दिल्ली के तख्त पर बैठे, पर मरहठों, जाटों और पठानों की चोट वे न सह सके। ईरान के नादिरशाह ने कोहेनूर और तख्तताऊस दोनों उनसे छीन लिए। अब्दाली ने दिल्ली पर कब्जा ही कर लिया। पर उनका अन्त पूरा-पूरा अंग्रेज़ों ने किया। अंग्रेज़ों के शासन की कहानी बड़ी दिलचस्प है।

अंग्रेज़ लोग पहले-पहल सौदागर के रूप में हिन्दुस्तान आए। आ तो गए थे ये अकबर-जहांगीर के ही समय में, पर तब उनके मज़बूत शासन में विदेशियों की दाल न गली। जैसे-जैसे हिन्दुस्तान की राजनीति कमज़ोर पड़ी वैसे ही वैसे अंग्रेजों की नीति भी सफल होती गई। अंग्रेज़ों की ही तरह फ्रेंच, डच और पुर्तगाली लोग भी अपनी-अपनी तिजारती कम्पनियां बना-बनाकर ताकतवर होने की कोशिश करते रहे। आपसी लड़ाइयों में पुर्तगाली और डच तो बरबाद हो गए, पर फ्रांसीसी और अंग्रेज कम्पनियां देशी राजाओं को आपस में लड़ाकर अपना लाभ करती रहीं। अन्त में क्लाइव ने फ्रांसीसियों की ताकत तोड़कर उनको हिन्दुस्तान से बाहर कर दिया। क्लाइव पहले अंग्रेज तिजारती सौदागरों के गिरोह, 'ईस्ट-इण्डिया कम्पनी' का क्लर्क था। उसने प्लासी की लड़ाई जीतकर हिन्दुस्तान में अंग्रेजी राज्य की नींव डाली। घूसखोरी से उसने बड़ा धन कमाया।
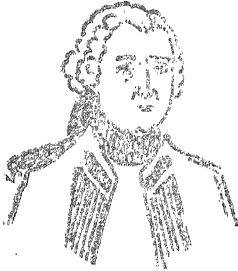
क्लाइव

वारेन हेस्टिंग्स क्लाइव के बाद गवर्नर-जनरल बनकर यहां आया। उसने घूसखोरी की हद कर दी। बनारस के

वारेन हेस्टिंग्स

राजा चेतसिंह और अवध की बेगमों से उसने बड़े जुल्म से धन बटोरा। उसने इस देश में अंग्रेजी राज्य की नींव मजबूत की। उसकी घूसखोरी से आजिज आकर पार्लियामेन्ट के कुछ ईमानदारों ने उस पर मुकदमा भी चलाया जो सात वर्ष तक चलता रहा। सात वर्ष तक बर्क उसके खिलाफ लेक्चर देता रहा, पर घूस और दोस्तों की मदद से हेस्टिंग्स साफ बच गया।

नए-नए गवर्नर-जनरल आते गए और देश में अंग्रेजी राज्य बढ़ता गया। पहले अंग्रेजी सरकार देशी रजवाड़ों से सन्धि करती, पर उस सन्धि का मतलब राजाओं को अपना मातहत बना लेना था। उन्हीं दिनों जमींदारी की प्रथा भी चलाकर कम्पनी ने प्रजा को एक नए सिरे से चूसना शुरू किया। कम्पनी ने यहां का रोजगार तो पहले ही नष्ट कर दिया था। ढाका की महीन मलमल बनाने वाले जुलाहों और कारीगरों के अंगूठे तक कटवा दिए गए थे। कम्पनी यहां से कच्चा माल ले जाती और बरमिंघम और मैन्चेस्टर की मिलों में उनसे पक्का माल तैयार कर मनमाने दामों में यहां लाकर बेच लेती।

डलहौजी ने यहां रेल चलाई और अंग्रेजी शिक्षा की

बुनियाद डाली। आज से ठीक सौ वर्ष पहले बम्बई से
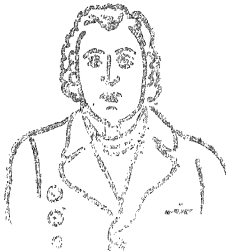
लार्ड डलहौजी

पहली रेल चली थी और मद्रास, बम्बई और कलकत्ते में विश्व-विद्यालय कायम हुए थे। पर रेल फौज और माल ढोने के लिए बनी। विश्वविद्यालय क्लर्क पैदा करने के लिए बने। डलहौजी ने अंग्रेजी राज्य बढ़ाने का एक नया तरीका निकाला। पहले राजाओं को लड़का न रहने पर गोद लेने का हक़ था। अब उसने वारिस न रहने पर राजाओं को अपनी हुकूमत में मिलाना शुरू कर दिया। इससे देश में बड़ी सनसनी फैली।

अंग्रेजों के जुल्म से परेशान होकर और अपना राज्य

नाना फरनवीस   रानी लक्ष्मीबाई   तांत्या टोपे

फिर से कायम करने के लिए उत्तरी भारत में सन् १८५७ में एक बग़ावत हुई। वह हिन्दुस्तान की आज़ादी की पहली लड़ाई थी। पेशवा, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, दिल्ली के

बहादुरशाह

बहादुरशाह, ताँत्या टोपे, बिहार के कुंवरसिंह विद्रोह के नेता थे। हिन्दू-मुसलमान दोनों एक होकर उसमें लड़े थे। पहले आग सेना में भड़की थी और मेरठ और बारकपुर से निकलकर दिल्ली, आगरा, बरेली, लखनऊ, फैजाबाद, झाँसी, कानपुर, आरा और पटने तक फैल गई। अंग्रेज़ अधिकतर मार डाले गए और एक बार अंग्रेज़ी राज्य की जड़ें इस जमीन से उखड़-सी गईं। रजवाड़ों ने इसके खिलाफ अंग्रेज़ों की मदद की; पर बड़ी मुश्किल से वह विद्रोह दबाया जा सका।

तांत्याटोपे और रानी लक्ष्मीबाई ने गज़ब का नेतृत्व किया। अंग्रेजों ने लिखा है कि रानी के बराबर लायक जनरल तब न अंग्रेज़ों के पक्ष में था, न हिन्दुस्तानियों के। वह मर्द के वेश में लड़ती हुई मारी गईं। उनका नाम इतिहास में अमर हो गया। हजारों की तादाद में हिन्दुस्तानी फाँसी चढ़ा दिये गए। पर पार्लियामेंट ने कम्पनी के कारनामे समझे

श्रौर उसको तोड़कर हिन्दुस्तान का राज्य श्रपने हाथ में ले लिया। मलिका विक्टोरिया हिन्दुस्तान की रानी बनी। श्रौर उसकी श्रोर से वायसराय श्राकर श्रब इस देश का शासन करने लगे।

: १६ :

धीरे-धीरे भारत में राष्ट्रीयता का प्रचार हुआ और लोगों में स्वराज्य की लगन लगी। विद्या के प्रचार से तो आजादी के लिए लोगों के दिलों में जगह हो ही गई थी, राष्ट्रीय कांग्रेस ने भी उसका खूब प्रचार किया। १८८५ ईस्वी में कांग्रेस की नींव पड़ी। शुरू में तो कांग्रेस ने केवल सरकारी नौकरियाँ माँगीं, बाद में वह राजनीतिक अधिकारों की भी मांग करने लगी। दादाभाई नौरोजी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, गोपालकृष्ण गोखले, बाल-गंगाधर तिलक आदि ने अपने-अपने तरीके से आजादी मांगी। इन लोगों के नेतृत्व में काँग्रेस की ताकत बढ़ी और जनता में उसका प्रचार हुआ। धीरे-धीरे महात्मा गांधी ने उसकी बागडोर संभाली।

गोपालकृष्ण गोखले

यह कांग्रेस की ही मांग का नतीजा था कि १९०५ ईस्वी में शासन के तरीकों में सुधार हुए। उन सुधारों को 'मार्ले-मिन्टो-सुधार' कहते हैं। इससे मुसलमानों को अलग

अधिकार दिये गए। पर उससे स्वराज्य का सवाल हल नहीं हुआ।

महात्मा गांधी

मोहनदास करमचन्द गांधी काठियावाड़ के सम्पन्न परिवार के थे। विलायत जाकर उन्होंने वकालत पास की और लौटकर हिन्दुस्तान में वकालत करने लगे। अफ्रीका में कुछ दिनों रहकर उन्होंने सच्चाई और अहिंसा से अंग्रेजों का मुकाबला किया। उनका सच पर अमिट विश्वास था और अपनी लड़ाई में वे सच्चाई और अहिंसा का ही इस्तेमाल करते थे। अहिंसा से उनका अर्थ था—मन, काम और बात, किसी से दूसरे का जी न दुखाना। वे कहते थे कि अगर कोई तुम्हारे बायें गाल पर थप्पड़ मारे तो दाहिना गाल भी उसके सामने कर दो। उसका बुरा न सोचो; उसे सुधारो। सत्य और अहिंसा से सब कुछ हासिल किया जा सकता है—स्वराज्य भी। अपने काम के तरीके को वे 'सत्याग्रह' कहते थे। इसी से उनका नाम महात्मा गांधी पड़ गया।

महात्मा गांधी अफ्रीका से हिन्दुस्तान आये। यूरोप में पहला महायुद्ध छिड़ा था। महात्मा गांधी ने सरकार की मदद की। लाखों हिन्दुस्तानी सिपाही यूरोप में जाकर लड़े और अंग्रेजों के लिए उन्होंने लड़ाई जीती। लोगों को आशा थी कि इससे हिन्दुस्तान को आज़ादी मिलेगी। पर आज़ादी मिलना तो दूर रहा 'रोलट ऐक्ट' नाम का कानून बनाकर उलटे सरकार ने हिन्दुस्तान पर जुल्म करना शुरू किया। पंजाब के जलियांवाला बाग़ में अंग्रेज जनरल डायर ने सभा में आई हुई निहत्थी भीड़ पर मशीनगन चलाकर तीन सौ आदमियों की हत्या कर दी। देश भर में हड़ताल हुई और महात्मा गांधी ने सन् १९२० में कांग्रेस पर अधिकार कर सरकार से असहयोग करने का आन्दोलन चलाया। सरकारी नौकरों ने नौकरी छोड़ दी, विद्यार्थियों ने स्कूल-कालेज छोड़ दिए। तय पाया कि हिन्दुस्तानी अंग्रेजी सरकार से किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखेंगे। हिन्दू-मुसलमान दोनों गांधी जी के झण्डे के नीचे आ खड़े हुए। मोतीलाल नेहरू, चितरंजन दास, बिट्ठलभाई पटेल, सरोजिनी नायडू, मौलाना मुहम्मद अली, शौकतअली, हकीम-

लाला लाजपतराय
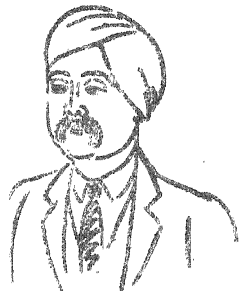
अजमल खाँ, लाला लाजपतराय, अबुलकलाम आजाद, डाक्टर अन्सारी, राजेन्द्रप्रसाद, राजगोपालाचारी वगैरह गाँधी जी के साथ आगे आए और आन्दोलन और ज़ोर से चलाया। नौजवानों के आगे जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचन्द्र बोस थे। १९१९ ईस्वी में भी शासन में कुछ सुधार हुए थे। पर वे इतने तुच्छ थे कि नेताओं ने उन्हें ठुकरा दिया। सरकार ने महात्मा गांधी के उस असहयोग-आन्दोलन का जवाब हज़ारों को जेल में ठूंस कर दिया। पर आज़ादी की मांग बढ़ती गई।
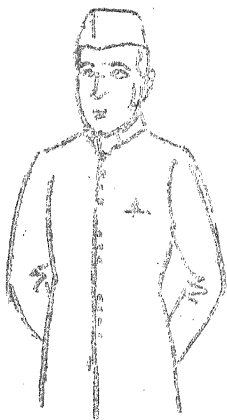
जवाहरलाल नेहरू

उधर कुछ नौजवानों में यह भावना जगी कि अहिंसा से कुछ नहीं होने का और उन्होंने अंग्रेज़ों का सामना पिस्तौल और बम से करने की ठानी।। बंगाल, महाराष्ट्र और पंजाब में अनेक गुप्त समितियाँ इस काम के लिए बनीं। अनेक नौजवान शहीद हुए और फांसी के तख्ते पर चढ़ गए। चन्द्रशेखर आज़ाद

चन्द्रशेखर आजाद

और सरदार भगतसिंह उन्हीं में थे ।

सरदार भगतसिंह

गांधी जी ने कुछ सत्याग्रह और किए जैसे नमक-सत्याग्रह और लगान-सत्याग्रह । इनके जवाब में भी सरकार ने सत्याग्रहियों पर बन्दूक और लाठी बरसाई । महात्मा गांधी को अछूतों को देखकर बड़ी पीड़ा होती थी । उन्होंने उनका नाम बदलकर 'हरिजन' यानी भगवान् के आदमी कर दिया । उनके उद्धार में लगे और उनके लिए उन्होंने मन्दिरों के द्वार खुलवा दिए ।

सन् पैंतीस में सरकार ने शासन में और सुधार किए और दिल्ली में पार्लियामेंट स्थापित हुई । पर उससे लोगों की आजादी की भूख न मिटी । आजादी का आन्दोलन दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा था । सन् सैंतीस में जो नया चुनाव हुआ तो कांग्रेस जीती और उसने ग्यारह सूबों में से नौ में अपनी सरकार बनाई । उसकी यह विजय जवाहरलाल नेहरू के कारण अधिक हुई । जवाहरलाल अब महात्मा गांधी के बाद हमारे देश के सबसे बड़े नेता हैं ।

कुछ ही समय बाद यूरोप में दूसरा महायुद्ध छिड़ा, जो संसार भर में फैल गया और छः वर्ष चला । उसमें कांग्रेस

ने सरकार की मदद न की और मदद के बदले पूरी आजादी मांगी। सरकार के इन्कार करने पर गांधी जी ने 'भारत छोड़ो' का नारा बुलन्द किया। इस पर सरकार ने हिन्दुस्तान के सारे कांग्रेसी नेताओं को कैद कर लिया। फिर तो देश भर में आग भड़क उठी। लोग सरकारी थाने जलाने लगे, रेल की लाइनें उखाड़ दी गईं और अनेक प्रकार से अपने कोप का प्रदर्शन किया। सरकार ने बड़े अत्याचार से उस आन्दोलन को दबाया।

इस बीच जापान बर्मा तक आ पहुँचा था। उसने कलकत्ते पर भी कुछ बम गिराए। सुभाषचन्द्र बोस, जो हिन्दुस्तान से भागे थे, तब बर्मा में थे। उन्होंने हिन्दुस्तानी सिपाहियों की एक सेना तैयार की और आजादी की लड़ाई बाहर से छेड़ी। एक दिन हवाई जहाज से जाते हुए उसके गिर पड़ने से जलकर उनकी मृत्यु हो गई। देश का लाजवाब रत्न खो गया। सन् पैंतालीस में यह महायुद्ध खत्म हुआ। रूस ने हिटलर को हराकर यूरोप की रक्षा की। इधर अमेरिका ने एटमबम से लाखों जापानियों को मारकर जापान को दुर्बल कर दिया। दूसरा महायुद्ध समाप्त हुआ।

कुछ काल से सरकार हिन्दू-मुसलमानों को लड़ाए रखने की नीति बरत रही थी। उसी का नतीजा मुस्लिम-लीग था, जिसने मुसलमानों के अधिकारों के लिए अलग से

लड़ाना शुरू किया। बाद में उनके नेता मुहम्मदअली जिन्ना हुए जिन्होंने हिन्दुस्तान के बंटवारे के लिए आन्दोलन शुरू किया। पंजाब, बंगाल और सिन्ध में मुसलमान ज्यादा थे। उन्होंने इन हिस्सों को मिलाकर पाकिस्तान नाम से मुसलमानों का अलग राज मांगा। हिन्दू-मुसलमानों में अनबन हुई, झगड़े हुए और दोनों ओर के गुण्डे लोगों को मारने-पीटने लगे। बम्बई, बंगाल, बिहार में जमीन हिन्दू-मुसलमानों के लहू से रंग गई। सरकार को तो यह मन्जूर ही था, कांग्रेस ने भी बंटवारा मन्जूर कर लिया। हिन्दुस्तान दो हिस्सों में बंट गया। लार्ड माउन्टबेटन तब वायसराय थे। उन्हीं के इन्तजाम से १५ अगस्त सन् १९४७ को पच्छिमी पंजाब, उत्तर-पच्छिमी सीमाप्रान्त, सिन्ध, बिलोचिस्तान और पूर्वी बंगाल मिलकर पाकिस्तान बने। बाकी देश हिन्दुस्तान या भारत।

इसमें सन्देह नहीं कि अंग्रेजों के सम्बन्ध से भारत का लाभ हुआ। देश में राष्ट्रीयता फैली, प्रजातन्त्र कायम हुआ, देशी रजवाड़े कुछ पाकिस्तान, बाकी हिन्दुस्तान में मिल गए। रेल, सड़कें, तार, डाकखाने बने, विज्ञान का प्रचार हुआ। हमारे साहित्य और सभ्यता पर भी उसका गहरा असर हुआ और अनेक यूरोपीय पंडितों ने हमारे इतिहास को फिर से खोजकर लिखा। यह सब निश्चय हमारे लाभ की चीजें हुईं।

: १७ :

परन्तु देश जो दो भागों में बंट गया, वह बड़ा बुरा हुआ। फिर भी शान्ति न हुई और पन्द्रह अगस्त के बाद हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में फिर लहू-लुहान मचा। लाखों हिन्दू मुसलमानों ने मार डाले और लाखों मुसलमान हिंदुओं ने मार डाले। औरतों और बच्चों पर भी भयानक अत्याचार हुए। लाखों के घर छूट गए।

महात्मा गांधी के दुःख का ठिकाना न रहा। वे हिन्दू और मुसलमानों को जिन्दगी भर गले मिलाते रहे थे। अब उनसे उनका एक-दूसरे का खून करना देखा न गया। पर कुछ कट्टर हिन्दू महात्मा जी के भी दुश्मन हो गए थे और एक दिन ३० जनवरी सन् १९४८ की शाम को पांच बजे जब वे दिल्ली में प्रार्थना-सभा में बोलने के लिए खड़े हुए तब एक हिन्दू ने उन पर पिस्तौल छोड़ी। तीन गोलियां, एक के बाद एक, लगीं। महात्मा ने हाथ जोड़ दिए और गिरते वक्त उनकी जबान पर आखिरी नाम भगवान का था। देश भर में अंधेरा छा गया। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने उस शाम रेडियो पर कहा, "हमारे

जीवन से प्रकाश चला गया है, और चारों ओर अंधेरा छा गया है !"

हिन्दुस्तान स्वतन्त्र प्रजातन्त्र बन चुका है। उसके प्रधान मन्त्री आज पण्डित जवाहरलाल नेहरू हैं जो चौदह साल तक हिन्दुस्तान की आजादी के लिए जेल में बन्द रहे हैं। हिन्दुस्तान गुलाम देशों को आज़ाद करने और संसार में शान्ति कायम करने का प्रण कर चुका है। उसके महान् नेता महात्मा गान्धी की यही इच्छा थी।